# हिंदी पुस्तक–2

(प्रथम भाषा)

M2T3U9

पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड

साहिबज़ादा अजीत सिंह नगर

© पंजाब सरकार

संशोधित संस्करण 2022-23 ......................... 5200 प्रतियाँ

All rights, including those of translation, reproduction and annotation etc., are reserved by the Punjab Government.

सम्पादक : शशि प्रभा जैन
डॉ० सुनील बहल

लेखक मण्डल : डॉ० नीरू कौड़ा, डॉ० सुनील बहल
विनोद शर्मा,
शिव शंकर, शशि प्रभा जैन, सुधा जैन

चित्रकार : कुलजीत कौर

**चेतावनी**

1. कोई भी एजेंसी-होल्डर अधिक पैसे लेने के उद्देश्य से पाठ्य-पुस्तकों पर जिल्दबंदी नहीं कर सकता। (एजेंसी-होल्डरों के साथ हुए समझौते की धारा नं. 7 के अनुसार)
2. पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित पाठ्य-पुस्तकों की जाली और नकली प्रकाशन(पाठ्य-पुस्तकों) की छपाई, प्रकाशन, स्टॉक करना, जमाखोरी या बिक्री आदि करना भारतीय दंड प्रणाली के अंतर्गत गैरकानूनी जुर्म है।

(पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड की पाठ्य-पुस्तकें बोर्ड 'वाटर मारक' वाले कागज़ के ऊपर ही मुद्रित की जाती हैं।)

**सचिव,** पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड, विद्या भवन, फेज़-8, साहिबज़ादा अजीत सिंह नगर-160062 द्वारा प्रकाशित एवं **नव दुर्गा ऑफसैट प्रिंटर्ज़,** मेरठ द्वारा मुद्रित।

# प्राक्कथन

पिछले कुछ वर्षों से राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा के ढाँचे में मूलभूत परिवर्तन लाने के विभिन्न प्रयास हो रहे हैं। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों के लिए बिना पक्षपात के शिक्षा को अधिक से अधिक लाभदायक बनाना है ताकि बच्चा बालिग होने तक केवल अक्षर ज्ञान तक ही सीमित होकर न रह जाए बल्कि मानवीय जीवन जैसी ईश्वरीय देन को अधिक सुंदर और जीने योग्य बनाने में अधिक से अधिक योगदान दे सके। आज हम जिस परिस्थिति में से गुज़र रहे हैं, उसमें सही शिक्षा देना और पढ़ना बच्चे और अध्यापक दोनों का सामूहिक उत्तरदायित्व है।

बोर्ड ने इस उत्तरदायित्व को समझते हुए आधुनिक शैक्षिक आवश्यकताओं के आधार पर हिंदी विषय के प्राइमरी स्तर के पाठ्यक्रम और पाठ्य-पुस्तकों का नवीकरण करने की योजना बनाई है। प्रवेश वर्ष 2007 में मातृभाषा हिंदी पढ़ने वाले विद्यार्थियों के लिए हिंदी पुस्तक-1 तैयार कर लागू की जा चुकी है।

हस्तीय पाठ्य-पुस्तक हमारा द्वितीय प्रयास है। पाठ्य-पुरस्तक में प्रथम प्रयास को आगे बढ़ाया गया है। पाठ्य-पुस्तक में ऐसे पाठों का चयन किया गया है जो उनके मानसिक एवं बौद्धिक स्तर के अनुकूल हों। प्रत्येक पाठ किसी न किसी नैतिक एवं मानवीय मूल्य को विकसित करता है। पाठ्य-पुस्तक में दिए गए चित्र भाषायी ज्ञान देने के साथ-साथ बच्चों की सूझ-बूझ एवं रचनात्मक क्षमता को विकसित करने में सहायक हैं।

हमें पूर्ण आशा है कि यह पुस्तक भाषा शिक्षा के मापदंडों पर खरी उतरेगी और विद्यार्थियों में मातृभाषा का ज्ञान देने में सहायक होगी। फिर भी, पुस्तक को और अधिक उपयोगी बनाने के लिए क्षेत्र से आए सभी सुझाव बोर्ड द्वारा आदर सहित स्वीकार किये जाएँगे।

**चेयरमैन**

पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड

# विषय—सूची


| पाठ संख्या | पाठ | लेखक | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|---|
| 1. | जब बोलो (कविता) | सोहन लाल द्विवेदी | 1 |
| 2. | एक रुपया | संकलित | 4 |
| 3. | आत्मविश्वास | डॉ. सुनील बहल | 7 |
| 4. | मीठे फल | संकलित | 11 |
| 5. | ठीक समय (कविता) | सोहन लाल द्विवेदी | 15 |
| 6. | ईमानदार बालक | सुधा जैन | 17 |
| 7. | बुराई नहीं, भलाई | डॉ. नीरू कौड़ा | 21 |
| 8. | मेहनत | डॉ. नीरू कौड़ा | 25 |
| 9. | तितली रानी (कविता) | सिमर सदोष | 29 |
| 10. | जन्म दिन | डॉ. सुनील बहल | 32 |
| 11. | साहसी दीपा | डॉ. सुनील बहल | 38 |
| 12. | हमारी भी सुनो ! | शिव शंकर | 43 |
| 13. | काम ही पूजा (कविता) | विनोद शर्मा | 48 |
| 14. | हंस किसका ? | संकलित | 52 |
| 15. | लोहड़ी | सुधा जैन | 57 |
| 16. | श्रवण कुमार | डॉ. सुनील बहल | 61 |
| 17. | प्यारा पंजाब (कविता) | संकलित | 65 |
| 18. | साथी हाथ बढ़ाना | शिव शंकर | 69 |
| 19. | अनमोल सीख | डॉ. जागीर सिंह | 73 |
| 20. | बापू गाँधी के तीन बंदर | शशि प्रभा जैन | 77 |
| 21. | कौन ? (कविता) | संकलित | 81 |

पाठ—1

## जब बोलो

जब बोलो, तब हँस कर बोलो,
बातों में मिसरी-सी घोलो।
जब बोलो, तब-सच बोलो,
कभी न बातें रच-रच बोलो।

जब बोलो, तब झुक कर बोलो,
सोच-समझ कर, रुक कर बोलो।
हँस कर मन की गाँठें खोलो,
जब बोलो, तब हँस कर बोलो।

## अभ्यास

### शब्दार्थ

मिसरी = चीनी से बनी वस्तु

मिसरी-सी = मिठास से भरी हुई

रच-रच बोलना = अपने आप बात बनाकर कहना

मन की गाँठ = मन में छिपी बात

### सही शब्द चुनकर वाक्य पूरे करो

1. हमें ... बोलना चाहिए। (रोकर/हँसकर)
2. हमारी बातचीत में ... होनी चाहिए। (मिठास/कड़वाहट)
3. हमें सदा ... बोलना चाहिए। (सच/झूठ)
4. हमें ... अपनी बात कहनी चाहिए (जल्दी-जल्दी/सोच-समझकर)
5. हमें अपनी बात ... कहनी चाहिए। (अकड़कर/झुककर)

### तुक मिलाओ

जब = ............. सच = .............

झुक = ............. बोलो = .............

### पढ़ो और समझो

हँस + कर = हँसकर रुक + कर = रुककर

झुक + कर = झुककर सोच + समझ + कर = सोच-समझकर

### वाक्य बताओ

मिसरी-सी सच-सच रच-रच मन की गाँठें

**अध्यापन निर्देश :** अध्यापक इस कविता का सस्वर वाचन गीत एवं अभिनय प्रणाली के द्वारा करवाये। बच्चों में वाणी के गुण यथा विनम्रता, सत्यनिष्ठा, मधुरता को अपनाने की ओर प्रेरित करे।

## रचनात्मक अभिव्यक्ति

### चित्र देखकर दिए गए शब्दों की सहायता से वाक्य पूरे करो

आदर        बुरी        रोकर        मिलजुलकर

(i) ऊँची आवाज़ में चीखकर बोलना ..................... आदत है।

(ii) हमें आपस में .....................रहना चाहिए।

(iii) ..................... अपनी बात कहने वाले बच्चे किसी को नहीं भाते।

(iv) हमें बड़ों का ..................... करना चाहिए।

पाठ—2

# एक रुपया

एक बार ईश्वर चंद्र विद्यासागर कहीं जा रहे थे। एक बालक आया और बोला, ''एक पैसा दे दो।''

विद्यासागर बोले, ''यदि मैं तुम्हें एक पैसे के स्थान पर एक रुपया दूँ तो तुम क्या करोगे ?''

बालक ने कहा, ''फिर मैं भीख नहीं मांगू गा।'' विद्यासागर ने उसे एक रुपया दे दिया।

कई साल बाद विद्यासागर बाज़ार में घूम रहे थे तो एक युवक ने उनके चरण छुए और प्रणाम करते हुए कहा, ''मैं वही हूँ, जिसे आपने एक रुपया दिया था। उससे मैंने फलों की रेहड़ी लगानी शुरू की थी और आज मेरी इस बाज़ार में फलों की दुकान है। आप उसे अपनी चरण-धूलि से पवित्र करें।''

## अभ्यास

### पढ़ो, समझो और लिखो

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| श् + व = श्व | = | ईश्वर | स् + थ | = | स्थ | = | स्थान |
| न् + द् + र = न्द्र | = | चंद्र | क् + य | = | क्य | = | क्या |
| द् + य = द्य | = | विद्या | प् + र | = | प्र | = | प्रणाम |
| म् + ह = म्ह | = | तुम्हें | त् + र | = | त्र | = | पवित्र |

### शब्दार्थ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| चरण | = | पैर | प्रणाम | = | हाथ जोड़कर अभिवाद्न |
| चरण-धूलि | = | पैरों की धूल | पवित्र | = | स्वच्छ, सत्व भाव से युक्त |

### बताओ

(1) बालक ने ईश्वर चंद्र विद्यासागर से क्या माँगा ?

(2) ईश्वर चंद्र विद्यासागर ने बालक से क्या कहा ?

(3) बालक ने एक रुपये का क्या किया ?

(4) इस कहानी से आपको क्या संदेश मिलता है ?

### पढ़ो और समझो

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| (क) | एक | = | अनेक | रुपया | = | रुपये |
| | पैसा | = | पैसे | दुकान | = | दुकानें |
| (ख) | बालक | = | बालिका | युवक | = | युवती |

### वाक्य बनाओ

प्रणाम पवित्र रेहड़ी धूलि

### नये शब्द बनाओ

श्व न्द्र स्थ प्र त्र

## रचनात्मक अभिव्यक्ति

### चित्र देखकर वाक्य पूरे करो

सामान उठाने वाला ......................।    पौधों की देखभाल करने वाला ......................।

जूतों को गाँठने वाला ......................।    फसल उगाने वाला ......................।

डाक बाँटने वाला ......................।    घड़े बनाने वाला ......................।

**अध्यापन निर्देश :** अध्यापक बच्चों को समझाए कि कोई भी काम छोटा या बड़ा नहीं होता। अपने हाथ से काम करने वाला व्यक्ति जीवन में सदा सफल होता है।

अध्यापक 'द्र', 'प्र', 'त्र' व्यंजनों की ओर संकेत करते हुए बताये कि जब 'र' व्यंजन किसी हलन्त व्यंजन के बाद लगता है तो उसका रूप उसी प्रकार होता है जैसा 'द्र', 'प्र' और 'त्र' में लगा है।

अध्यापक छात्रों की बताए कि भाषा में बोलते/पढ़ते/लिखते समय अर्थ की स्पष्टता हेतु वाक्य के अंत या बीच में विराम लेना (रुकना) होता है। अतः भाषा के लिखित रूप में विशेष स्थानों पर रुकने का संकेत देने वाले लिखित चिह्नों को विराम चिह्न कहते हैं। जैसे : *एक बालक आया और बोला, '' एक पैसा दे दो''*। छात्रों को बताया जाये कि पूर्ण विराम ( ।) वाक्य के अंत में लगता है। जहां बहुत थोड़ी देर विराम हो, वहाँ अल्प विराम (,) चिह्न लगता है तथा जब किसी की कही हुई बात की ज्यों का त्यों लिखा जाता है, वहां उद्धरण चिह्न ('' '') लगता है।

पाठ — 3

# आत्मविश्वास

एक बार किसी स्कूल का वार्षिक परीक्षा परिणाम घोषित किया गया। स्कूल के प्रिंसिपल ने पास विद्यार्थियों के नाम बोले और उन्हें पास होने की बधाई दी। एक विद्यार्थी प्रिंसिपल द्वारा बोले गए परिणाम से नाखुश था क्योंकि उसका नाम नहीं बोला गया था। उसने तुरन्त खड़े होकर प्रिंसिपल से निवेदन किया। उसने कहा, ''सर ! मेरा नाम नहीं बोला गया।'' प्रिंसिपल ने कहा कि जिनका नाम नहीं बोला गया, वे फेल हैं।

किन्तु वह बालक आत्मविश्वासी था। जब उसने कहा कि ऐसा नहीं हो सकता तो प्रिंसिपल ने उसे पाँच रुपये जुर्माना लगा दिया। उसके बार-बार कहने पर प्रिंसिपल ने जुर्माना बढ़ाकर दस रुपये कर दिया किन्तु वह बालक अपनी बात पर अडिग रहा। इतने में स्कूल के क्लर्क ने प्रिंसिपल के पास आकर कहा, ''सर, क्षमा करें, आपको जो पास विद्यार्थियों की सूची दी गयी थी उसमें एक विद्यार्थी का नाम टाइप होने से रह गया था। कृपया पास विद्यार्थियों की सूची

में एक विद्यार्थी का नाम और जोड़ लें।'' यह वही विद्यार्थी था जो प्रिंसिपल से अपने पास होने का दावा कर रहा था। वह केवल पास ही नहीं था अपितु उसके अंक भी कक्षा में सबसे अधिक थे। बच्चो ! यह बालक और कोई नहीं था बल्कि डॉ. राजेन्द्र प्रसाद थे, जो भारत के पहले राष्ट्रपति बने।

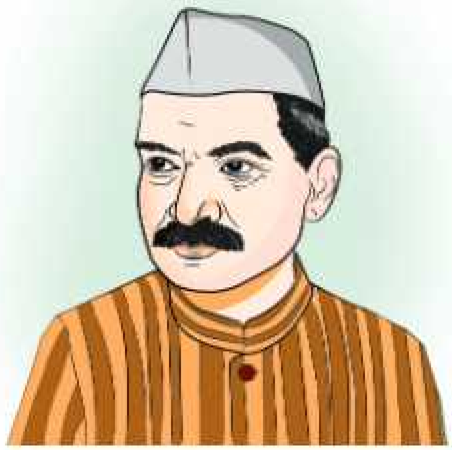

## अभ्यास

### पढ़ो, समझो और लिखो

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| त् + म | = | त्म | = | आत्म | क् + ष | = | क्ष = क्षमा, परीक्षा |
| स् + क | = | स्क | = | स्कूल | ष् + ट् + र | = | ष्ट्र = राष्ट्र |
| द् + व | = | द्व | = | द्वारा | न् + द् + र | = | न्द्र = राजेन्द्र |
| क् + य | = | क्य | = | क्योंकि | प् + र = प्र | = | प्रसाद, प्रिंसिपल |
| न् + त | = | न्त | = | तुरंत | द् + य = द्य | = | विद्यार्थी |
| क् + ल | = | क्ल | = | क्लर्क | | | |

### शब्दार्थ

| | | |
|---|---|---|
| आत्म-विश्वास | = | अपने ऊपर भरोसा होना |
| वार्षिक | = | प्रति वर्ष होने वाला, सालाना |
| घोषित | = | ऐलान |
| प्रिंसिपल | = | सीनियर सेकेंडरी स्कूल का मुखिया |
| अडिग | = | न डिगने वाला, अटल |
| क्षमा | = | माफ़ी |

### बताओ

(1) वार्षिक परिणाम सुनकर एक विद्यार्थी खुश क्यों नहीं था ?

(2) जिस का नाम पास विद्यार्थियों में नहीं बोला गया, उसने प्रिंसिपल से क्या कहा ?

(3) प्रिंसिपल को अपनी गलती का अनुभव कब हुआ ?

(4) जिसका नाम पास विद्यार्थियों में नहीं बोला गया, उस बालक का क्या नाम था ?

(5) बड़े होकर डॉ० राजेन्द्र प्रसाद किस तरह प्रसिद्ध हुए ?

### वाक्य बनाओ

| | | | |
|---|---|---|---|
| आत्म-विश्वासी | सूची | नाखुश | निवेदन |
| जुर्माना | राष्ट्रपति | कृपया | तुरंत |

### इन्हें जानो

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| स्कूल | = | पाठशाला | परिणाम | = | नतीजा |
| वार्षिक | = | सालाना | विद्यार्थी | = | छात्र |
| बधाई | = | मुबारक | अंक | = | नंबर |

### जानो

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| फेल | = | पास | अधिक | = | कम |
| पास | = | दूर | जोड़ | = | घटा |

**अध्यापन निर्देश :**

1. अध्यापक बच्चों में आत्मविश्वास के गुण को विकसित करे। भारत के प्रथम राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद की जीवनी पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करे।
2. अध्यापक 'र' व्यंजन के विभिन्न रूप बच्चों को समझाये।

(i) हलंत 'र्' अर्थात् स्वर रहित 'र्' अपने से अगले व्यंजन पर 'रेफ' (ँ) के रूप में प्रयुक्त होता है जैसे 'क्लर्क' शब्द में हलंत 'र्' अपने से अगले व्यंजन 'क' पर 'र्क' के रूप में आया है।

(ii) यदि हलंत 'र्' के बाद वाले व्यंजन के साथ मात्रा लगी हो तो हलंत 'र्' मात्रा के ऊपर या बाद में लगता है। जैसे 'जुर्माना' शब्द में रेफ 'ँ' मात्रा के ऊपर (र्ी) आया है।

(iii) जब 'र' से पहले हलंत व्यंजन (अर्थात् स्वर रहित व्यंजन) हो तो 'र' उस व्यंजन के नीचे लिखा जाता है और उस व्यंजन का हलंत हट जाता है। जैसे 'प्रसाद' शब्द में 'र' 'प्' व्यंजन के नीचे 'प्र' लगा है।

(iv) टवर्ग व्यंजनों में 'ट्' और 'ड्' के साथ 'र' ट्र, ड्र रूप में लिखा जाता है। जैसे 'राष्ट्र'।

### अंतर समझो

(क) क्लर्क ने प्रिंसीपल के **पास** आकर कहा। (निकट)

वह बालक अपने **पास** होने का दावा कर रहा था। (उत्तीर्ण)

(ख) उस बालक के सबसे अधिक **अंक** थे। (नंबर)

बालक माँ के **अंक** में बैठा था। (गोदी)

### रचनात्मक अभिव्यक्ति

### चित्र देखकर नीचे दिए गए शब्दों की सहायता से वाक्य पूरे करो

भार पुस्तक खेल

आत्मविश्वास के बल पर एक हाथ से अपाहिज व्यक्ति ... उठा सकता है, अंधा व्यक्ति ... पढ़ सकता है। एक पैर से अपाहिज व्यक्ति ... भी सकता है।

पाठ—4

# मीठे फल

एक बार महाराजा रणजीत सिंह अपने अंगरक्षकों के साथ शिकार खेलने के लिए जा रहे थे। तभी एक पत्थर का टुकड़ा बड़ी ज़ोर से उनकी कनपटी पर लगा। अंगरक्षकों ने देखा कि कुछ बच्चे पत्थर मार-मार कर बेर तोड़ रहे थे। वे बच्चों को पकड़ कर महाराज के पास ले आए। आपने पूछा, ''बच्चो ! आपने मुझे पत्थर क्यों मारा ?''

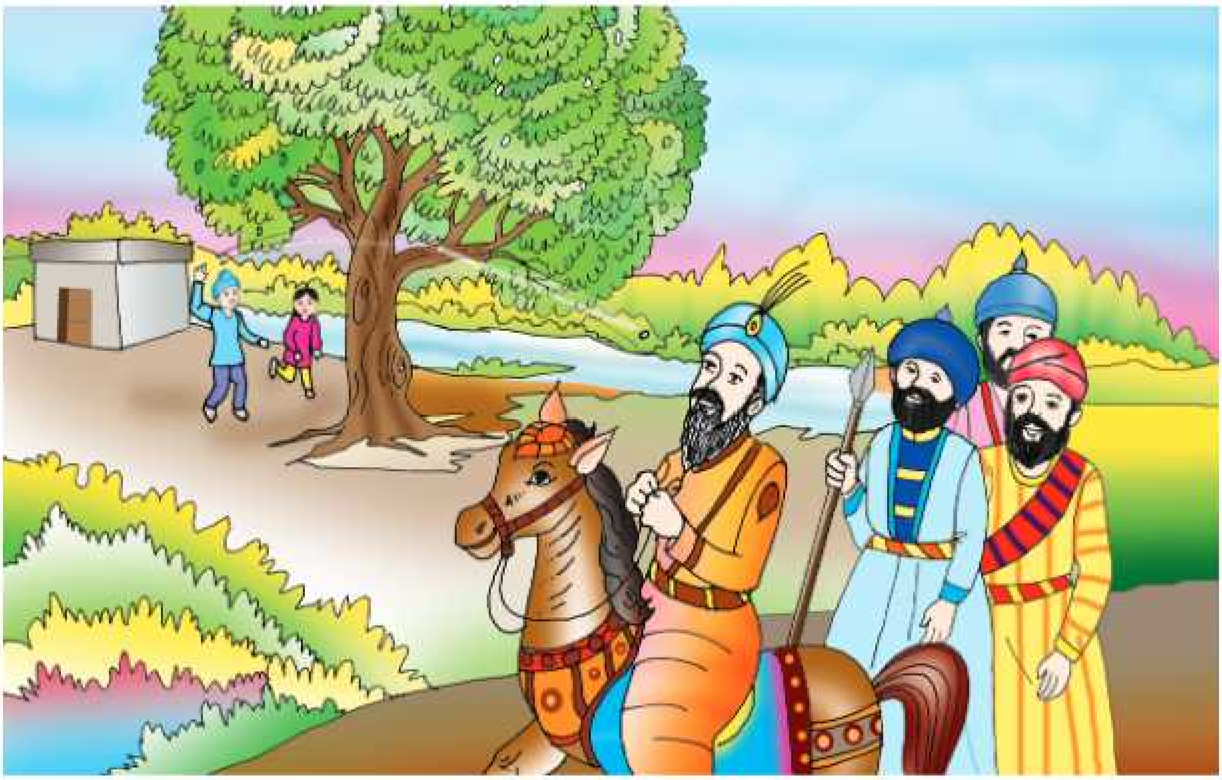

एक बच्चे ने डरते-डरते कहा, ''महाराज, हम तो बेर तोड़ रहे थे। यह अचानक आपके आ लगा। हमें क्षमा कीजिए।'' इस पर आपने कहा, ''बच्चो, डरने की कोई बात नहीं। जब एक बेरी पत्थर खाकर तुम्हें मीठे-मीठे बेर देती है, तो क्या आपका महाराज पत्थर खाकर आपको सज़ा देगा ? नहीं, मैं भी तुम्हें कुछ दूँगा।''

उन्होंने अपने अंगरक्षकों से बच्चों को मीठे-मीठे बेर तथा मिठाइयाँ देने को कहा। बच्चे बेर तथा मिठाइयाँ लेकर हँसते-खेलते चले गए।

## अभ्यास

**पढ़ो, समझो और लिखो**

(क) त् + थ = त्थ = पत्थर

म् + ह = म्ह = तुम्हें

न् + ह = न्ह = उन्हें, उन्होंने

(ख) च् + च = च्च = बच्चे

**शब्दार्थ**

| | | |
|---|---|---|
| अंगरक्षक | = | राजा-महाराजा की रक्षा के लिए नियुक्त सैनिक |
| कनपटी | = | कान और आँख के बीच का स्थान |
| क्षमा | = | माफ़ी |

**बताओ**

(1) महाराजा रणजीत सिंह कहाँ जा रहे थे ?

(2) बच्चे पत्थर मारकर क्या तोड़ रहे थे ?

(3) महाराजा को पत्थर कहाँ पर लगा ?

(4) महाराजा ने बच्चों से क्या कहा ?

(5) महाराजा ने बच्चों को क्या दिया ?

**वाक्य बनाओ**

मार-मार, डरते-डरते, मीठे-मीठे, हँसते-खेलते

**समझो**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तुम | = | तुम्हें | यह | = | ये |
| उन | = | उन्हें/उन्होंने | वह | = | वे |

**अन्तर समझो**

जज ने चोर को एक साल जेल की **सज़ा** दी। (दण्ड)

मैंने अपना कमरा **सजा** दिया है। (सजाना)

**बॉक्स में दिये गये चिह्नों की पहचान करो**

(1) बच्चे बेर तोड़ रहे थे।

(2) महाराजा ने पूछा, "बच्चो ! आपने मुझे पत्थर क्यों मारा ?"

**अध्यापन निर्देश :**

(1) अध्यापक बच्चों को महाराजा के प्रजा के प्रति प्रेम के बारे में बताते हुए बताये कि प्राचीन काल में राजा अपनी प्रजा के हित का पूरा ध्यान रखते थे। प्रजा भी अपने राजा के गुणों की प्रशंसा करती थी।

(2) अध्यापक विराम चिह्नों ।, , ? " " के बारे में बच्चों को जानकारी दे।

(3) द्‌वित्व व्यंजन : जब एक व्यंजन दो बार आए तो उसे द्‌वित्व रूप में लिखा जाता है। द्‌वित्व व्यंजन लिखते समय पहला व्यंजन स्वर रहित और दूसरा व्यंजन स्वर सहित होता है। जैसे 'बच्चा' शब्द में 'च' व्यंजन दो बार (एक बार आधा और दूसरी बार पूरा) आया है।

**नोट :** किसी भी वर्ग के दूसरे तथा चौथे व्यंजन का द्‌वित्व नहीं होता परन्तु जहाँ इनके द्‌वित्व होने का आभास मिलता है वहाँ वर्ग के पहले और दूसरे तथा तीसरे और चौथे व्यंजन का संयोग होता है। जैसे 'पत्थर' शब्द में 'थ' व्यंजन के द्‌वित्व होने का आभास मिलता है परन्तु दूसरे व्यंजन (थ) के साथ पहला व्यंजन (त्) जोड़ा जाता है। इसी प्रकार 'शुद्‌ध' शब्द में 'ध' व्यंजन के द्‌वित्व होने का आभास मिलता है। परन्तु चौथे व्यंजन 'ध' के साथ तीसरे व्यंजन 'द्' का संयोग होता है।

## रचनात्मक कौशल

फलों के नाम लिखें व रंग भरें :

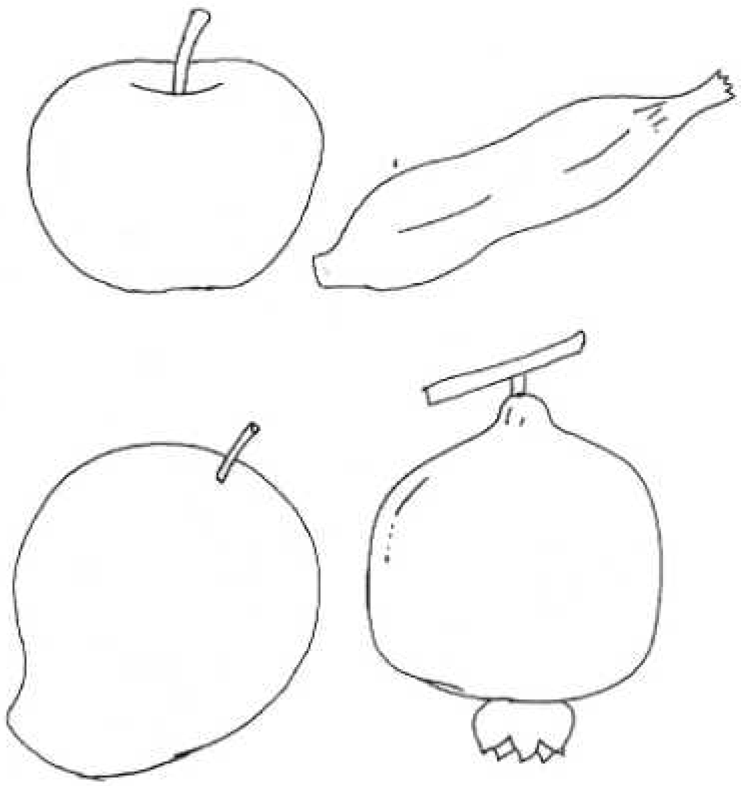

अध्यापक बच्चों को फल धोकर खाने को कहे।

**अध्यापन निर्देश :** 'सज़ा' शब्द का अर्थ है—दंड। इसमें उर्दू की ध्वनि 'ज़' का प्रयोग हुआ है। हिंदी में एक शब्द है 'सजा' जिसका अर्थ है—आकर्षक व सुंदर। इसमें—'ज' ध्वनि है। विद्यार्थियों को बताया जाये कि उर्दू से आए अरबी-फारसी मूलक वे शब्द जो अब हिंदी के अंग बन चुके हैं व जिनकी विदेशी ध्वनियों का हिंदी ध्वनियों में रूपांतर हो चुका है, हिंदी रूप में ही स्वीकार किये जा सकते हैं। जैसे—कलम, किला, दाग आदि (क़लम, क़िला, दाग़ नहीं) किंतु 'सज़ा' जैसे कुछ ऐसे अन्य शब्द भी हैं जिनमें ध्वनि भेद (ज़—ज) के कारण अर्थ बदल जाता है। अत: शुद्ध विदेशी रूप में प्रयोग करने या उच्चारण—भेद स्पष्ट करते समय कई बार नुक्ता लगाना पड़ जाता है और लगाना भी चाहिए। अन्य उदाहरण—राज (शासन) राज़ (रहस्य)।

पाठ—5

# ठीक समय

ठीक समय पर,

नित उठ जाओ।

ठीक समय पर,

चलो नहाओ।

ठीक समय पर,

खाना खाओ।

ठीक समय पर,

पढ़ने जाओ।

ठीक समय पर,

मौज उड़ाओ।

ठीक समय पर,

गाना गाओ।

ठीक समय पर,

सब कर पाओ।

तो तुम बहुत,

बड़े कहलाओ।

## अभ्यास

### बताओ

इस कविता में क्या बताया गया है ?

### कविता की पंक्तियाँ पूरी करो

(1) ठीक समय पर ... उठ जाओ।

(2) ... खाना खाओ।

(3) ठीक समय पर ... जाओ।

### तुक मिलाओ

जाओ ................. खाना .................

### लिखो

समय खाना पढ़ने मौज पाओ

### रचनात्मक कौशल

घड़ी का चित्र बनाओ। एक से बारह तक अंक लिखो। घड़ी की सभी सुइयों के बारे में पता करो। अपने माता-पिता तथा अध्यापक की सहायता से समय देखना सीखो।

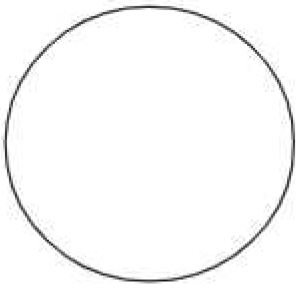

**अध्यापन निर्देश :**

अध्यापक इस कविता का सस्वर वाचन करवाये तथा बच्चों में सभी काम समय पर करने की आदत विकसित करे।

पाठ—6

# ईमानदार बालक

कृष्णपुर गाँव की पाठशाला में गुरु जी गणित की कॉपियाँ जाँच रहे थे। आज बहुत कम बच्चों ने गृह-कार्य किया था। शायद सवाल कुछ कठिन थे। लेकिन ताज्जुब की बात थी कि गोपाल के सारे सवाल ठीक थे। गुरु जी गोपाल का गृह-कार्य देखकर प्रसन्न हो गए।

उन्होंने गोपाल की पीठ थपथपाते हुए कहा, 'देखो बच्चो ! गोपाल ने कितनी खूबसूरती से सारे सवाल हल किए हैं। उसने इसके लिए पूरी मेहनत की है। आपको गोपाल से सीखना चाहिए।'

यह सुनकर गोपाल अचानक फूट पड़ा। गोपाल को इस तरह रोते देख सभी बच्चे हैरान रह गए। गुरु जी भी एक टक उसे देख रहे थे। उन्होंने उससे रोने का कारण पूछा। लेकिन गोपाल सुबक रहा था। आखिर उसने धीरे से उठकर कहा, ''मास्टर जी, आपने मेरी इतनी तारीफ की

लेकिन मैं वास्तव में इसके लायक नहीं। मैंने ये सारे सवाल अपने आप नहीं किए। इनमें से कुछ सवाल मैंने अपने मित्र की कॉपी से उतारे हैं। इसलिए मैं तारीफ का नहीं, दण्ड का भागी हूँ।''

''नहीं गोपाल'' मास्टर जी ने मंद-मंद मुस्कराते हुए कहा, ''बेशक, तुमने सवाल देखकर किए हैं पर तुम्हारी सच्चाई और ईमानदारी प्रशंसा करने योग्य है। तुम सच्चे और ईमानदार ही नहीं अपितु साहसी भी हो।''

गोपाल का हृदय रोमांचित हो गया। सभी विद्यार्थी कभी गोपाल और कभी मास्टर जी को देख रहे थे।

## अभ्यास

### पढ़ो, समझो और लिखो

| | | |
|---|---|---|
| (क) | कृ + ष्= कृष् = कृष्ण | स् + ट = स्ट = मास्टर |
| | स् + त = स्त = वास्तव | त् + र = त्र = मित्र |
| | स् + क= स्क = मुस्कराते | ग् + य = ग्य = योग्य |
| (ख) | च् + च= च्च = सच्चाई | |
| | ज् + ज= ज्ज = ताज्जुब | |

### शब्दार्थ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| गृह-कार्य | = | घर से हल करके लाया जाने वाला काम | | | |
| ताज्जुब | = | हैरानी | सुबकना | = | धीमी आवाज़ में रोना |
| दण्ड | = | सज़ा | मंद-मंद | = | धीरे-धीरे |
| रोमांचित | = | जिसके रोयें खड़े हों, पुलकित, खुश | | | |

## बताओ

(1) गुरु जी ने किस विषय का गृह कार्य दिया था ?

(2) जिस बालक के सारे सवाल ठीक थे, उसका क्या नाम था ?

(3) गोपाल रोने क्यों लगा ?

(4) गोपाल ने मास्टर जी के सामने क्या कहा ?

(5) मास्टर जी ने गोपाल के किन गुणों की प्रशंसा की ?

## वाक्य बनाओ

पीठ थपथपाना, फूट पड़ना, मंद-मंद मुस्कराना, रोमांचित होना

## समझो

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सवाल | = | प्रश्न | ताज्जुब | = | हैरान |
| तारीफ | = | प्रशंसा | मास्टर | = | गुरु |

## समझो और लिखो

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सच्चा | = | सच्चाई | खूबसूरत | = | खूबसूरती |
| ईमानदार | = | ईमानदारी | साहस | = | साहसी |

## समझो

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ईमानदार | = | बेईमान | दण्ड | = | इनाम |
| सच्चा | = | झूठा | प्रश्न | = | उत्तर |
| लायक | = | नालायक | ठीक | = | गलत |

## नये शब्द बनाओ

स्ट, त्र, न्ह, च्च, न्न

**विराम चिह्न लगाओ**

मास्टर जी आपने मेरी इतनी तारीफ की लेकिन मैं इसके लायक नहीं

**रचनात्मक कौशल**

इस कहानी से मिलने वाली शिक्षा के सूत्र वाक्यों 'ईमानदार बनो', 'सच बोलो', 'साहसी बनो' को चार्ट पर लिखकर कक्षा में टाँगो।

**अध्यापन निर्देश :** इस पाठ में आए 'कॉपियाँ' शब्द में एक नयी ध्वनि 'ऑ' का प्रयोग किया गया है, जो कि हिंदी की 'आ' तथा 'ओ' ध्वनि से अलग है। अध्यापक विद्यार्थियों को बताए कि अंग्रेज़ी भाषा के 'ऑ' ध्वनि वाले शब्दों से सही उच्चारण के लिए अद्र्धचन्द्र 'ऑ' (ॉ) का प्रयोग किया जाता है। अन्य उदाहरण—टॉफियाँ, डॉक्टर, ऑफिस, कॉफी, कॉलेज आदि। अध्यापक इस कहानी से मिलने वाली शिक्षा को बच्चों के मन में उतारने का प्रयास करे। इन गुणों को बच्चे अपने व्यवहार में लायें ताकि उनका स्वस्थ मानसिक विकास हो सके।

पाठ—7

# बुराई नहीं, भलाई

किसी पेड़ पर बंदर और बंदरिया का एक जोड़ा रहता था। उनका एक बच्चा था—भोलू। भोलू बड़ा नटखट था। वह हमेशा ऐसी शरारतें करता जिनसे दूसरों को परेशानी होती। उसकी इस आदत से सभी दु:खी थे।

एक बार की बात है, भोलू के माता-पिता एक पेड़ पर बैठे आपस में बातें कर रहे थे। भोलू नज़र बचाकर वहाँ से चल पड़ा। अभी वह थोड़ी ही दूर गया ता कि उसने एक छोटा-सा दलदल देखा। शरारती तो वह था ही। जैसे ही उसने सामने से नन्हे हिरण 'लाली' को आते देखा, उसे एक शरारत सूझी। वह चिल्ला कर बोला—लाली ! मुझे पकड़ो। लाली भोलू को पकड़ने के लिए तेज़ी से उसकी ओर लपका।

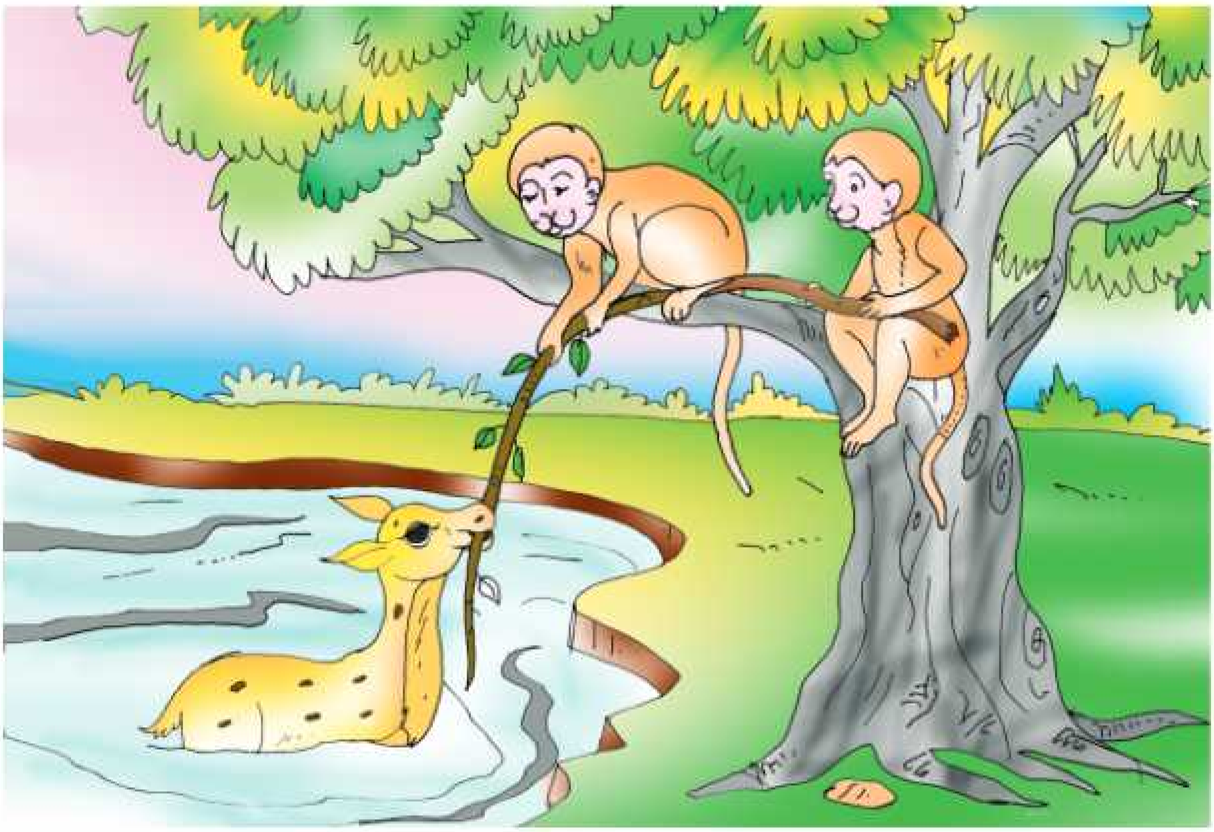

बस, फिर क्या था ? भोलू दलदल की ओर भाग चला। जैसे ही लाली दलदल के पास पहुँचा, भोलू लपक कर पेड़ पर चढ़ गया। बेचारा लाली संभल नहीं पाया और धड़ाम से दलदल में गिर गया।

लाली ज़ोर–ज़ोर से रोने–चिल्लाने लगा क्योंकि वह दलदल में धँसता जा रहा था। लाली की यह हालत देख भोलू भी डर के मारे रोने लगा। वह रोता जा रहा था और अपनी माँ व पिता जी को ज़ोर–ज़ोर से पुकार रहा था। उसकी आवाज़ सुनकर माँ व पिता जी दौड़े आए।

लाली की हालत देख वे घबरा गए। मगर उन्होंने हिम्मत नहीं हारी। उन्होंने जल्दी से पेड़ पर लिपटी एक मज़बूत लता को खींचा तथा उसे लाली की ओर फेंका। माँ ने ज़ोर से कहा—''लाली बेटा ! इस लता को अपने मुँह से कस कर पकड़ लो। हम धीरे–धीरे तुम्हें बाहर खींच लेंगे।''

ऐसा ही हुआ। माँ व पिताजी ने लाली को बचा लिया। भोलू अपने किए पर बहुत लज्जित था। पिताजी बोले—''बेटा ! हमें दूसरों के साथ बुराई का नहीं, भलाई का व्यवहार करना चाहिए। कभी शरारत में भी ऐसा काम नहीं करना चाहिए, जिससे दूसरों का नुकसान हो। तुम्हारे बुरे व्यवहार ने लाली को मौत की तरफ़ धकेल दिया था और हमारे भले व्यवहार ने उसे बचा लिया। इसलिए हमेशा भलाई करो, बुराई नहीं।''

भोलू अब बदल गया था।

## अभ्यास

**पढ़ो, समझो और लिखो**

(क) म् + ह = म्ह = तुम्हारा

व् + य = व्य = व्यवहार

न् + ह = न्ह = नन्हा

(ख) च् + च = च्च = बच्चा　　ल् + ल = ल्ल = चिल्ला

म् + म = म्म = हिम्मत　　ज् + ज = ज्ज = लज्जित

## शब्दार्थ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| नटखट | = | शरारती | लता | = | बेल |
| दलदल | = | कीचड़ | नुकसान | = | हानि |
| धड़ाम | = | ज़ोर की आवाज़ | व्यवहार | = | बर्ताव |
| लज्जित | = | शर्मिंदा | भलाई | = | दूसरे का हित करना |
| लपककर | = | सहसा तेज़ी से आगे बढ़ना | | | |

## बताओ

(1) पेड़ पर कौन रहता था ?

(2) भोलू का स्वभाव कैसा था ?

(3) भोलू ने हिरण के साथ क्या शरारत की ?

(4) भोलू के माता-पिता ने लाली को कैसे बचाया ?

(5) हमें दूसरों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए ?

## पढ़ो और समझो

| | | |
|---|---|---|
| (क) | पेड़ = वृक्ष | मुँह = मुख |
| | हिरण = मृग | डर = भय |
| (ख) | बंदर = बंदरिया | माता = पिता |
| (ग) | बुराई = भलाई | बुरा व्यवहार = भला व्यवहार |
| | अन्दर = बाहर | धीरे-धीरे = तेज़ी से |
| | दु:खी = सुखी | एक = अनेक |

## नये शब्द बनाओ

च्च, ल्ल, म्म, ज्ज

**अध्यापन निर्देश :** यदि भला किसी का कर न सको तो बुरा किसी का मत करना। अध्यापक बच्चों को समझाये कि हमें ऐसा कोई भी काम नहीं करना चाहिए जिससे दूसरों को कठिनाई हो।

## रचनात्मक अभिव्यक्ति

चित्र में दिखाई गई बातों के आधार पर चित्र के नीचे भली आदत/बुरी आदत लिखें।

..............................

..............................

..............................

..............................

**अध्यापन निर्देश :** *बस फिर क्या था ?* इस वाक्य द्वारा अध्यापक विद्यार्थियों को बताए कि जिस वाक्य में प्रश्न पूछा जाये, वहां प्रश्न वाचक चिह्न ( ?) लगाया जाता है।

पाठ—8

# मेहनत

रानी आज बहुत उदास है। कल उसकी पाठशाला में खेल-प्रतियोगिता होने जा रही है। वह कई दिनों से इसके लिए तैयारी कर रही ती मगर आज जब फाइनल रिहर्सल हुई तो वह उसमें चौथा स्थान ही पा सकी।

उसे उदास देख उसकी दादी माँ ने उससे पूछा, ''बेटी रानी ! आज तुम प्रसन्न नहीं हो। कारण क्या है ?''

रानी ने उन्हें सब बात बताई। दादी माँ ने उसकी पूरी बात बड़े ध्यान से सुनी। वे कुछ देर सोचती रहीं।

फिर बोलीं—''उठो रानी ! मेरे साथ पीछे आँगन में चलो।''

दादी माँ रानी के साथ पीछे आँगन में गईं। वहाँ उन्होंने रानी को चींटियों की एक लम्बी कतार दिखाई जो अपने बिल में से निकल रहीं थीं और दूर पड़े रोटी के टुकड़े में से छोटे-छोटे कणों को खींचकर बिल की ओर ला रहीं थीं।

दादी माँ ने कहा—''देखो रानी ! ये नन्ही चींटियाँ कितनी मेहनत से रोटी के इन कणों को

इकट्ठा कर रहीं हैं। अच्छा, अब देखो !

मैं क्या करने जा रही हूँ ?''

दादी माँ ने गीली मिट्टी से उस बिल को अच्छी तरह बंद कर दिया। रानी बोली—''दादी माँ! आपने यह क्या किया ?''

दादी माँ बोली—''बिटिया ! चुपचाप देखती रहो।''

रानी हैरानी से मिट्टी से ढके उस बिल को देखती रही। अब चींटियाँ बाहर कैसे आएँगी ? मगर थोड़ी देर बाद उसने देखा कि चींटियों ने उस मिट्टी में भी छेद कर लिया है और अब वे कतार बनाकर दोबारा अपने काम में जुट गईं हैं।

रानी समझ गई। जब चींटियाँ हिम्मत नहीं हारतीं और लगातार मेहनत करती रहती हैं तो भला वह मेहनत क्यों नहीं कर सकती ?

रानी उठी और बाहर पार्क में जाकर कल होने वाली खेल-प्रतियोगिता की तैयारी में जुट गई। बिना थके, बिना रुके।

अगले दिन प्रतियोगिता में पहला स्थान जिस छात्रा को मिला, वह थी—रानी।

## अभ्यास

### पढ़ो, समझो और लिखो

(क) ध् + य = ध्य = ध्यान  (ख) ट् + ट = ट्ट = मिट्टी

स् + थ = स्थ = स्थान  ट् + ठ = ट्ठ = इकट्ठा

म् + ब = म्ब = लम्बी

च् + छ = च्छ = अच्छा

(ख) न् + न = न्न = प्रसन्न  (घ) त् + र = त्र = छात्रा

र् + स = र्स = रिहर्सल

### शब्दार्थ

प्रतियोगिता = होड़  नन्ही = छोटी

रिहर्सल = ठीक ढँग और समय से पहले काम का अभ्यास

कण = छोटा टुकड़ा  आँगन = घर के अंदर या सामने का स्थान

कतार = पंक्ति, लाइन  बिल = ज़मीन में बनाया हुआ छेद

### बताओ

(1) रानी उदास क्यों हो गई ?

(2) दादी माँ ने उसे आँगन में क्या दिखाया ?

(3) दादी माँ ने बिल को कैसे बंद किया ?

(4) चींटियाँ किस प्रकार चल रहीं थीं ?

(5) रानी ने चींटियों से क्या प्रेरणा ली ?

### पढ़ो और समझो

(क) उदास = खुश  अन्दर = बाहर

गीली = सूखी  आगे = पीछे

(ख) चींटी = चींटियाँ  रानी = रानियाँ

(ग) छात्रा = छात्र  रानी = राजा

अन्तर समझो

(क) रानी आज उदास **है** ।

चींटियाँ मेहनत करती **हैं** ।

(ख) चींटियाँ रोटी के कणों को बिल की **ओर** ला रहीं थीं।

रानी **और** दादी माँ आँगन में गईं।

रचनात्मक अभिव्यक्ति

चित्र को देखकर दिए गए शब्दों की सहायता से वाक्य पूरे करो :

मेहनत रस मधुमक्खियाँ शहद छत्ता फूलों

पेड़ पर मधुमक्खियों का ... लगा हुआ है। पेड़ के आस-पास ... के कुछ पौधे लगे हुए हैं। फूलों पर ... मँडरा रही हैं। वे फूलों से ... चूस रही हैं। इसी रस से वे ... बनाती हैं। शहद को बनाने में उन्हें बहुत ... करनी पड़ती है।

**अध्यापन निर्देश :** इस पाठ का उद्देश्य बच्चों में परिश्रम का गुण विकसित करना है। चींटियों से प्रेरणा लेकर मेहनत के बल पर निरंतर आगे बढ़ सकते हैं। यह भावना बच्चों के मन में जाग्रत करें। 'पढ़ो, समझो और लिखो' शीर्षक के अन्तर्गत दो तरह के संयुक्ताक्षर सिखाये गये हैं। अध्यापक बच्चों को बताये कि (क) में दिये गये व्यंजनों को खड़ी पाई (लकीर) हटाकर संयुक्त किया गया है। जबकि (ख) में व्यंजनों के नीचे हलन्त लगाकर संयुक्त किया गया है। (ग) में एक ही व्यंजन के दो रूपों (एक आधा और एक पूरा) का ज्ञान दिया गया है। (घ) में 'र' व्यंजन के संयुक्त रूप दिये गये हैं।

पाठ—9

# तितली रानी

तितली रानी, तितली रानी,
अपने घर की बड़ी सयानी।
रंग-बिरंगी जिसकी चोली,
पंखों पर जिसके रंगोली।

फूलों पर उड़ती-इठलाती,
बच्चों को यह बहुत लुभाती।
आँखों में यह स्वप्न सजाती,
हाथ लगाने से शर्माती।
रुत बसंत में आती तितली,
गीत खुशी के गाती तितली।
कभी कहा करती थी नानी,

स्वर्ण परी की एक कहानी।

तितली रानी, तितली रानी,

अपने घर को बड़ी सयानी।

## अभ्यास

### पढ़ो, समझो और लिखो

स् + व = स्व,          प् + न = प्न = स्वप्न

स् + व + र् + ण = स्वर्ण

### शब्दार्थ

रंगोली = अलग-अलग रंगों का मेल, त्योहार आदि पर रंगीन बुरादे से फर्श पर की जाने वाली चित्रकारी

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| स्वप्न | = | सपना | रुत | = | ऋतु |
| लुभाना | = | मोहित करना | स्वर्ण | = | सोना |

### कविता की पंक्तियाँ पूरी करो

(1) रंग-बिरंगी ...,
पंखों पर ...।

(2) रुत बसंत में ...,
गीत खुशी के ...।

### बताओ

(1) तितली के पंख कैसे होते हैं ?

(2) तितली किस ऋतु में दिखाई देती है ?

(3) नानी किसकी कहानी सुनाया करती थी ?

### तुक मिलाओ

चोली = रंगोली    सजाती = .......

इठलाती = ........    आती = .......

### वाक्य बनाओ

रंग-बिरंगी    बसंत    कहानी    सयानी

### रचनात्मक कौशल

तितली को उड़ते हुए देखो। तितली का चित्र बनाओ। उसमें रंग भरो।

**अध्यापन निर्देश**

1. अध्यापक गीत एवं अभिनय प्रणाली द्वारा कविता का सस्वर गायन करवाए। बच्चों के मन में प्राकृतिक वस्तुओं के प्रति प्रेम जागृत करें।
2. पाठ में 'ऋतु' को बोलचाल की भाषा में 'रुत' कहा गया है।
3. अध्यापक बच्चों को सभी ऋतुओं का ज्ञान देते हुए विशेष रूप से ऋतुराज 'बसंत ऋतु' के बारे में बताये।

पाठ — 10

# जन्म दिन

(आज चार्वी का जन्म दिन है। वह सो रही है। उसके माता-पिता एवं बहन एलीका उसके बिस्तर के पास गये।)

माँ : (चार्वी को प्यार से सहलाते हुए) चार्वी बेटी उठो ! आज तुम्हारा जन्मदिन है। जन्मदिन की तुम्हें बहुत-बहुत मुबारक हो।

पापा : हाँ-हाँ ! बेटी। उठो। जन्म दिन की बधाई हो।

एलीका : हैपी बर्थ डे चार्वी।

(चार्वी झट से उठ जाती है और माँ के साथ लिपट जाती है।)

चार्वी : धन्यवाद मम्मी। आज मैं अपने सहपाठियों के लिए टॉफियाँ लेकर स्कूल जाऊँगी।

पापा : ठीक है बेटी। सबसे पहले अनाथाश्रम जाकर बच्चों को मिठाई भी तो बाँटनी है।

(उसके बाद चार्वी नहा धोकर नयी पोशाक पहनकर अपने पापा के साथ अनाथाश्रम के बच्चों को मिठाई बाँटने गयी। फिर वह स्कूल गयी और उसने वहाँ अपने सहपाठियों को टॉफियाँ बाँटीं। वह आज बहुत खुश है और शाम को जन्म दिन की पार्टी को लेकर बहुत उत्साहित है। छुट्टी के बाद वह घर गयी और अपनी बहन एलीका व माँ के साथ पार्टी की तैयारी करने लगी।)

एलीका : देखो चार्वी ! मैंने सारे रंग-बिरंगे गुब्बारे फुला दिये हैं और झिलमिलाती हुई झंडियाँ भी तैयार कर दी हैं। आओ ! इन्हें दीवार पर लटका दें।

चार्वी : ठीक है।

(चार्वी और एलीका ने मिलकर गुब्बारों से घर को सजा दिया।)

माँ : चार्वी ! तुम्हारे जन्म दिन के लिए केक और हलवा मैंने अपने हाथों से बनाया है। तुम्हारे पापा समोसे, गुलाबजामुन और आइसक्रीम लेकर आते ही होंगे। (इतने में उसके पापा पार्टी का सामान लेकर आ गये।)

पापा : चार्वी ! एलीका ! देखो ! पार्टी का समय हो गया है। मेहमान आते ही होंगे। (थोड़ी ही देर में चार्वी के चाचा-चाची, मामा-मामी व अन्य मेहमान व दोस्त आ गये। सभी ने चार्वी को सुन्दर उपहार दिये। चार्वी सभी को धन्यवाद कर रही थी और उनका स्वागत कर रही थी। कुछ ही देर में पार्टी शुरू हो गयी। एक मेज़ पर सुन्दर-सा केक सजा हुआ है। केक पर आठ मोमबत्तियाँ लगी हुई हैं और केक पर लिखा है—'चार्वी को जन्म दिन की बहुत-बहुत बधाई।' सभी लोग उस मेज़ को घेर कर खड़े हो गये जहाँ केक रखा हुआ था।)

माँ : बेटी चार्वी। आज तुम्हारा जन्मदिन है इसलिए सात मोमबत्तियों को बुझा दो और आठवीं मोमबत्ती को जलती रहने दो।

(चार्वी ने ऐसा ही किया और सभी लोग गाने लगे–जन्मदिन मुबारक हो चार्वी, जन्मदिन मुबारक हो चार्वी।)

पापा : चार्वी ! चलो, अब केक काटो।

चार्वी : अच्छा पापा।

(चार्वी ने केक काटा और सभी ने ज़ोरदार तालियाँ बजायीं।)

इसके बाद सभी को केक, हलवा, गुलाबजामुन और समोसे परोसे गये। सभी ने बड़े चाव से उन्हें खाया। फिर नाच गाना शुरू हुआ। चार्वी की सहेलियों ने गीत गाये व नृत्य किया। चार्वी ने भी अपनी सहेलियों के साथ मिलकर नृत्य किया। फिर सभी ने खाना और आइसक्रीम खाकर चार्वी से अलविदा ली। सभी कह रहे थे कि आज उन्होंने बहुत मौज मस्ती की। उन्हें आज का दिन हमेशा याद रहेगा।

## अभ्यास

### पढ़ो, समझो और लिखो

(क) न् + म = न्म = जन्म

क् + र = क्र = आइसक्रीम

स् + त = स्त = बिस्तर, दोस्त, मस्ती

र् + टी = र्टी = पार्टी

स् + क = स्क = स्कूल

त् + स = त्स = उत्साहित

स् + व = स्व = स्वागत

र् + वी = र्वी = चार्वी

न् + द = न्द = सुन्दर

न् + य = न्य = धन्यवाद

त् + य = त्य = नृत्य

म् + ह = म्ह = तुम्हारा

(ख) श् + र = श्र = आश्रम

(ग) म् + म = म्म = मम्मी    ट् + ट = ट्ट = छुट्टी

ब् + ब = ब्ब = गुब्बारा

### शब्दार्थ

सहपाठी = साथ पढ़ने वाला    उपहार = तोहफा

अनाथाश्रम = वह स्थान जहाँ बिना माँ-बाप के बच्चे रखे जाते हैं।

मेहमान = अतिथि    नृत्य = नाच

अलविदा = विदा होते समय कहा जाने वाला एक पद-अच्छा, अब चलते हैं।

धन्यवाद = कृतज्ञता प्रकट करने का एक शब्द

### किसने कहा

(1) ''चार्वी बेटी उठो ! आज तुम्हारा जन्मदिन है।''

(2) ''अनाथाश्रम जाकर बच्चों को मिठाई भी तो बाँटनी है।''

(3) ''तुम्हारे जन्मदिन के लिए केक और हलवा मैंने अपने हाथों से बनाया है।''

(4) ''सात मोमबत्तियों को बुझा दो और आठवीं मोमबत्ती को जलती रहने दो।''

### बताओ

(1) चार्वी क्यों खुश है ?

(2) चार्वी की बहन का क्या नाम है ?

(3) चार्वी को जन्मदिन की बधाई सबसे पहले किसने दी ?

(4) चार्वी और एलीका ने जन्मदिन की क्या-क्या तैयारी कीं ?

(5) चार्वी ने अपना जन्मदिन कैसे मनाया ?

### पढ़ो, समझो और लिखो

(क) टॉफी = टॉफियाँ    मोमबत्ती = मोमबत्तियाँ

झंडी = झंडियाँ    ताली = तालियाँ

मिठाई = मिठाइयाँ    सहेली = सहेलियाँ

(ख) माता = पिता　　बेटा = बेटी

बहन = भाई　　चाचा = चाची

मामा = मामी　　नाना = नानी

### अन्तर समझो

(क) थोड़ी देर **में** मेहमान आते ही होंगे।

आज **मैं** टॉफियाँ लेकर स्कूल जाऊँगी।

(ख) **उस ने** नयी पोशाक पहनी।

चार्वी **उन का** धन्यवाद कर रही थी।

### नये शब्द बनाओ

क्र, र्, श्र

### रचनात्मक कौशल

जन्मदिन से संबंधित चित्र बनाओ और उसमें अलग-अलग रंग भरो।

### रचनात्मक अभिव्यक्ति

आज मेरा ...................... है।

मैंने नयी ...................... पहनी है।

मेरे माता-पिता ......................लाये हैं।

मैंने सबके साथ मिलकर ...................... काटा।

सभी ने मिलकर ......................गाया।

### अध्यापन निर्देश

1. अध्यापक बच्चों को जन्मदिन की भाँति घर में होने वाले समारोहों को मिलकर मनाने की ओर प्रेरित करे। स्कूल में होने वाले समारोहों में सभी बच्चे मिलजुल कर काम करें। जिससे उनमें यह भावना विकसित हो कि खुशी के अवसर मिलजुल कर मनाने से मन खुश रहता है, सहयोग की भावना उत्पन्न होती है तथा किसी से भी कोई वस्तु लेते/देते समय वे उसका धन्यवाद अवश्य करें।
2. 'र' व्यंजन को संयुक्त करने के विभिन्न रूप पाठ संख्या 3 में समझाए गये हैं। अध्यापक उनका बार-बार अभ्यास करवाये।

पाठ—11

# साहसी दीपा

माधोपुर गाँव में एक लड़की रहती थी। उसका नाम दीपा था। वह बारह साल की थी। उसके पिता जी शहर में नौकरी करते थे तथा माँ घर में बीमार रहती थी। इसलिए दीपा को पढ़ाई के साथ-साथ घर का कामकाज भी करना पड़ता था। वह बहुत बहादुर व होशियार लड़की थी। उसके घर के पास एक नदी बहती थी। वह नदी के किनारे कपड़े धोने जाती थी। उसे नदी में नहाना व तैरना बहुत अच्छा लगता था।

एक दिन दीपा अपनी सहेली के साथ नदी के किनारे कपड़े धो रही थी। वहाँ से थोड़ी दूरी पर रवि और हरीश नदी में नहा रहे थे। नहाते-नहाते रवि नदी में डूबने लगा और हरीश उसे डूबने से बचाने की कोशिश करने लगा। हरीश चिल्लाने लगा, ''बचाओ, बचाओ।'' दीपा और उसकी सहेली ने हरीश के चिल्लाने की आवाज़ें सुनीं। दीपा ज्यों ही उसे बचाने के लिए नदी में कूदने लगी त्यों ही उसकी सहेली ने नदी में उसे कूदने से इसलिए मना कर दिया क्योंकि मगरमच्छ रवि और हरीश की तरफ बढ़ रहा था।

किन्तु दीपा ने अपनी सहेली की एक न मानी। दीपा ने कहा, मैं इन्हें मगरमच्छ से ज़रूर बचाऊँगी। तुम गाँव जाकर इनके घर खबर कर दो। यह कहकर दीपा ने नदी में छलाँग लगा दी। उसने हिम्मत न छोड़ी और तेज़ी से तैरते हुए उनकी तरफ बढ़ने लगी। उधर मगरमच्छ भी शिकार को पाकर बहुत खुश था और उन्हें निगलने के लिए ललचा रहा था। हरीश भी मगरमच्छ को अपनी ओर आता देख घबरा गया और हाँफने लगा। वह रवि को बचा नहीं पा रहा था। इतने में दीपा, रवि और हरीश के पास पहुँच गयी। उसने हरीश को हिम्मत बँधाई और जल्दी तैरकर किनारे पर जाने को कहा। दीपा ने रवि को पकड़ा और बड़ी बहादुरी से उसे किनारे पर ले आई। हरीश भी किनारे पर पहुँच गया। बेचारा मगरमच्छ अपना-सा मुँह लेकर रह गया। शिकार उसके चंगुल में नहीं फँसा। उसे आज खाली हाथ लौटना पड़ा।

इतने में दीपा की सहेली रवि और हरीश के माता-पिता को ले आयी। अपने बच्चों को जीवित देखकर वे बहुत खुश हुये। उन्होंने दीपा का धन्यवाद किया। गाँव के सभी लोगों ने दीपा के साहस की सराहना की। दीपा को उसकी इस बहादुरी के लिए 26 जनवरी को वीरता पुरस्कार दिया गया।

## अभ्यास

### पढ़ो, समझो और लिखो

(क) च् + छ = च्छ = अच्छा, मगरमच्छ न् + य = न्य = धन्यवाद

ल् + द = ल्द = जल्दी स् + क = स्क = पुरस्कार

### शब्दार्थ

होशियार = सावधान, चौकस कोशिश = प्रयास, यत्न

मगरमच्छ = गहरे जल में पाया जाने वाला बहुत बड़ा, भीषण एवं हिंसक जन्तु, घड़ियाल

चंगुल = हाथ की उँगलियों के मोड़ने से बनी मुद्रा, पकड़, काबू

धन्यवाद = कृतज्ञता

पुरस्कार = इनाम

खबर = समाचार

सराहना = प्रशंसा प्रकट करने का शब्द

हाँफना = जल्दी-जल्दी और लम्बी लम्बी सांस लेने लगना

## बताओ

(1) दीपा कैसी लड़की थी ?

(2) दीपा नदी के किनारे क्या कर रही थी ?

(3) 'बचाओ-बचाओ' की आवाज़ें किसने लगाई ?

(4) दीपा की सहेली ने उसे नदी में कूदने से मना क्यों किया ?

(5) दीपा ने रवि को डूबने से कैसे बचाया ?

(6) दीपा को कौन-सा पुरस्कार, कब मिला ?

## वाक्य पूरे करो

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| **होशियार** | **किनारे** | **मगरमच्छ** | **बहादुर** | **धन्यवाद** | **वीरता** | **पुरस्कार** |

(1) दीपा ................ और ................ लड़की थी।

(2) नदी में ................ था।

(3) दीपा रवि को ................ पर ले आई।

(4) रवि और हरीश के माता-पिता ने दीपा का ................ किया।

(5) दीपा को 26 जनवरी के दिन ................मिला।

### वाक्य बनाओ

हिम्मत, धन्यवाद, बहादुरी, पुरस्कार, ठान लेना, हिम्मत बंधाना, एक न मानना, खाली हाथ लौटना, अपना-सा मुँह लेकर रह जाना।

### पढ़ो, समझो और लिखो

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| साल | = | वर्ष | किनारा | = | तट |
| लड़की | = | बालिका | जीवित | = | ज़िन्दा |

### लिंग बदलो

माता = ..................

लड़की = ..................

### समझो

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| गाँव | = | शहर | घर | = | बाहर |
| डूबना | = | तैरना | वीर | = | कायर |

### नये शब्द बनाओ

च्छ न्य स्क ल्द

**अध्यापन निर्देश :** अध्यापक बच्चों में इस गुण का विकास करे कि जब भी कोई कठिनाई आये, हमें साहस से काम लेना चाहिए। बच्चों ने यदि कोई ऐसी साहस भरी कहानी/घटना देखी या सुनी हो तो उसे सुनें।

## रचनात्मक अभिव्यक्ति

चित्र देखकर नीचे दिए गए शब्दों की सहायता से वाक्य पूरे करो

साहसी दुकान दीवाली पटाखों आग बच्चा बचा

.................. का त्योहार है। बाज़ार में .................. की दुकानें सजी हुई हैं। एक दुकान में अचानक ..................लग गई है। एक..................आग में फँस गया है। वह ज़ोर–ज़ोर से चिल्ला रहा है। एक बालिका उसे जान पर खेलकर .................. रही है। वह ... बालिका है।

पाठ—12

# हमारी भी सुनो !

## पात्र

| | | |
|---|---|---|
| पैदलपथ | : | फुटपाथ |
| कालिमा | : | सड़क |
| लालिमा | : | लाल बत्ती |
| पीतिमा | : | पीली बत्ती |
| हरीतिमा | : | हरी बत्ती |
| ज़ेबरा | : | ज़ेबरा लाइन |

पैदल पथ : दीदी कालिमा ! आज तुम उदास दिखाई दे रही हो।

कालिमा : क्या बताऊँ ? आज मन बहुत दु:खी है। लोग मेरा प्रयोग तो खूब करते हैं परन्तु चलते समय लापरवाही करते हैं और चोट लगवा बैठते हैं आह ! आज सुबह ही चुन्नू-मुन्नू को चोट लग गयी।

पैदल पथ : ओह ! कैसे ?

कालिमा : वे गेंद खेलते-खेलते मुझ पर दौड़े आये कि अचानक मोटर गाड़ी से टकरा गये और उन्हें चोट लग गयी।

पैदल पथ : अरी ! हम कितना समझाते हैं कि हमारे किनारे गेंद मत खेलो। पर उफ़ ! ये बच्चे समझते ही नहीं।

कालिमा : बिल्कुल ठीक ! यदि बच्चे पैदल चलते समय भी तुम्हारे साथ रहें तो कितना अच्छा हो।

पैदल पथ : अरे ! बच्चे तो बच्चे, बड़ों को भी मेरे साथ-साथ रहना चाहिए। आखिर मैं इनकी सेवा के लिए ही तो हूँ।

लालिमा : (पास जाकर) दोनों में क्या गपशप हो रही है ?

कालिमा : गपशप क्या ! हम तो लोगों की बातें कर रहे हैं। हम सबकी सेवा के लिए हैं किन्तु लोग हमारा सदुपयोग न करके दुरुपयोग करते हैं और अपनी जान जोखिम में डालते हैं।

लालिमा : यही हमारा भी रोना है। लोग हम तीनों बहनों का कहना नहीं मानते और दुर्घटना हो जाती है। सबसे ज्यादा उल्लंघन लोग मेरा करते हैं। मेरे द्वारा इशारा करने पर भी लोग सड़क पार करते हैं और किसी न किसी से टकरा जाते हैं।

पीतिमा : अरे ! तुम्हें हँसी की बात बताऊँ। एक बार एक व्यक्ति बड़ी हैरानी से हम तीनों बहनों को देखने लगा। वह साइकिल पर था। लालिमा को देखकर रुक गया। मैंने तैयार होने

को कहा पर उसने ध्यान नहीं दिया। फिर उसने हरी बहन को भी अनदेखा कर दिया और वहीं बुत बनकर खड़ा रहा।

पैदल पथ : फिर क्या हुआ ?

पीतिमा : फिर क्या ! वह तब चला जब लालिमा आँखें फाड़े खड़ी थी। उसने उसे अनदेखा कर दिया और कार से टकरा गया।

हरीतिमा : कई लापरवाह या चिंता में डूबे लोग पहले तो मेरे इशारे की प्रतीक्षा करते रहते हैं। किन्तु जब मैं इशारा देती हूँ तो उन्हें पता ही नहीं चलता और वहीं सड़क पर खड़े रहते हैं और पीछे वाला कोई उन्हें टक्कर मार देता है। कितना अच्छा हो यदि लोग लालिमा पर रुकें, पीतिमा पर तैयार हों और मेरे इशारे पर चलें तो दुर्घटना न हो।

ज़ेबरा : जी हाँ ! मेरे शरीर पर बनी काली सफेद धारियों पर ही पैदल चलने वालों को सड़क पार करनी चाहिए। वाहन चालक जब लाल बत्ती पर अपना वाहन रोकें तो मेरे ऊपर अपने वाहन को मत खड़ा करें। मुझसे कुछ दूरी पर रुकने के लिए लगाई गई सफेद रेखा पर ही वाहन रोकें ताकि पैदल चलने वालों को असुविधा न हो।

कालिमा : चलते समय सदा मेरे बायीं ओर चलना चाहिए और मुड़ते समय सदा इशारा देना चाहिए। दाएँ-बाएँ देखकर ही मुझे पार करना चाहिए।

पैदल पथ : हाँ भई ! हम सभी लोगों की सुरक्षा चाहते हैं। यदि लोग हमारी बातों को मानेंगे तो दुर्घटना नहीं होगी।

## अभ्यास

**पढ़ो, समझो और लिखो**

(क) प् + र = प्र = प्रयोग

क्+ ष = क्ष = सुरक्षा

दु + र् = दुर् = दुर्घटना

ज् + य = ज्य = ज़्यादा

(ख) न् + न = न्न = चुन्नू-मुन्नू

ल् + ल = ल्ल = उल्लंघन

त् + त = त्त = बत्ती

## शब्दार्थ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| दु:ख | = | कष्ट, तकलीफ | उल्लंघन | = | नियम को तोड़ना |
| जोखिम | = | खतरा | दुर्घटना | = | बुरी घटना |
| दुरुपयोग | = | बुरा उपयोग | सदुपयोग | = | अच्छा उपयोग |
| बुत | = | मूर्ति की तरह जड़ | अनदेखा | = | बिना देखे |
| इशारा | = | संकेत | प्रतीक्षा | = | इंतज़ार |

## बताओ

(1) चुन्नू-मुन्नू को चोट कैसे लगी ?

(2) लाल बत्ती हमें क्या संकेत देती है ?

(3) पीली बत्ती पर हमें क्या करना चाहिए ?

(4) हरी बत्ती का क्या अर्थ है ?

(5) हमें सड़क कैसे पार करनी चाहिए ?

(6) सड़क पर काली-सफेद धारियाँ क्यों बनी होती हैं ?

## सही मिलान करो

| | |
|---|---|
| काली-सफेद धारियाँ | रुकना |
| पीली बत्ती | चलना |
| हरी बत्ती | तैयार रहना |
| लाल बत्ती | पैदल सड़क पार करना |

## पढो, समझो और लिखो

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| आज | = | कल | दाएँ | = | बाएँ |
| सुख | = | दु:ख | चलना | = | रुकना |
| ऊपर | = | नीचे | सदुपयोग | = | दुरुपयोग |
| खड़ा | = | बैठा | काली | = | सफेद |

## समझो

| | | |
|---|---|---|
| कालिमा | = | काला |
| लालिमा | = | लाल |
| पीतिमा | = | पीला |
| हरीतिमा | = | हरा |

## रचनात्मक कौशल

बच्चे ज़ेबरा लाइनों, लाल, पीली और हरी बत्ती का चित्र बनायें तथा उनमें रंग भरें।

## इन्हें अपनायें

(1) हमेशा सड़क के बाईं ओर चलें।

(2) सड़क के निकट गेंद न खेलें।

(3) सड़क हमेशा दाएँ-बाएँ देखकर पार करनी चाहिए।

(4) पैदल चलते समय सड़क हमेशा काली-सफेद धारियों, जिन्हें ज़ेबरा लाइनें कहा जाता है, से पार करनी चाहिए।

(5) लाल बत्ती होने पर रुकना चाहिए।

(6) पीली बत्ती होने पर चलने के लिए तैयार रहना चाहिए।

(7) हरी बत्ती होने पर चलना चाहिए।

**अध्यापन निर्देश :** (i) *आह ! आज सुबह ही चुन्नू-मुन्नू को चोट लग गयी।* (ii) *ओह ! कैसे ?* (iii) *हाँ भई ! हम सभी लोगों की सुरक्षा चाहते हैं।* अध्यापक बताएं कि पहले वाक्य में 'आह' से शोक, दूसरे वाक्य में 'ओह' से विस्मय व तीसरे वाक्य में 'हाँ भई' से स्वीकारना मनोभाव प्रकट हो रहे हैं। अत: जो शब्द शोक, विस्मय, स्वीकृति, आदि भावों को प्रकट करें, विस्मयादिबोधक शब्द कहलाते हैं। इनके याद विस्मयादिबोधक चिह्न ( !) का प्रयोग होता है। छात्रों को यह भी बताया जाये कि इसके साथ-साथ सम्बोधन में भी यह चिह्न ( !) प्रयुक्त हो सकता है।

पाठ—13

# काम ही पूजा

काम ही पूजा, काम धर्म है
इस मंत्र का, गान करें।
काम कोई भी, नहीं है छोटा
काम का हम, सम्मान करें।।

यह कुम्हार है—घड़े बनाता।
गमले बरतन—खूब सजाता।
चर्मकार-जूते चमकाए।
टूटे गाँठ दे नए बनाए।।

यह ललारी खुशियाँ बिखराता,
चुनरी पगड़ी पे रंग चढ़ाता
रंगों से जब रंग मिल जाते
जीवन को रंगीन बनाते।।

धोकर कपड़े इस्त्री है करता,
कपड़ों की सिलवट को हरता।
धुले-प्रैस कपड़े हम पाएँ
धोबी को तब भूल न जाएँ।।

हो किसान, नाई या माली,
देते हैं जीवन को लाली।
मेहतर हो या फेरी वाला,
कोई नहीं कम चाहे ग्वाला।।

प्यारे बच्चो ! इतना जानो।
मन से करो जो भी ठानो।
काम ही जीवन का शृंगार।
काम ही है सुख का आधार।

## अभ्यास

### पढ़ो, समझो और लिखो

(क) स् + त् + र = स्त्र = स्त्री

श् + ऋ = शृ = शृंगार

ग् + व = ग्व = ग्वाला

म् + ह = म्ह = कुम्हार

(ख) म् + म = म्म = सम्मान

(ग) ध् + र् + म = धर्म

च् + र् + म = चर्म

### शब्दार्थ

सम्मान = इज़्ज़त

चर्मकार = चमड़े का काम करने वाला

मेहतर = सफ़ाई करने वाला

कुम्हार = मिट्टी के बर्तन बनाने वाला

ललारी = रंगाई का काम करने वाला

ग्वाला = घर में आकर दूध देने वाला व्यक्ति

### बताओ

(1) कुम्हार क्या काम करता है ?

(2) चर्मकार क्या काम करता है ?

(3) रंगाई का काम करने वाले को क्या कहते हैं ?

(4) धोबी क्या काम करता है ?

(5) अपने आस-पास के उन सभी लोगों के नाम लिखो जो अपने हाथ से काम करते हों।

### वाक्य बनाओ

कुम्हार, चर्मकार, ललारी, माली, मेहतर, ग्वाला

### तुक मिलाओ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| गान | = | .................. | माली | = | .................. |
| बनाता | = | .................. | श्रृंगार | = | .................. |

### समझो

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| घड़ा | = | घड़े | कपड़ा | = | .................. |
| जूता | = | .................. | गमला | = | .................. |

### नये शब्द बनायें

स्र, रु, ‘ृ’ (‘ऋ’ की मात्रा)

**अध्यापन निर्देश :** अध्यापक अपने आस-पास के अन्य लोगों का परिचय देते हुए बच्चों के मन में यह भावना विकसित करे कि अपने हाथों से काम करने वाले व्यक्ति की हमेशा जीत होती है। बच्चे ऐसे लोगों का सम्मान करें।

## रचनात्मक अभिव्यक्ति

**नीचे दिए गए चित्रों को ध्यान से देखो। प्रत्येक पर तीन-चार वाक्य लिखें।**

बढ़ई

लुहार

जुलाहा

चर्मकार

पेंटर

बच्चे घर के फालतू सामान से कोई फोटो फ्रेम, पेन/पेंसिल स्टैंड आदि बनायें अथवा कोई तसवीर बनाकर उसमें रंग भरें।

**नीचे दिए गए शब्दों की सहायता से वाक्य पूरे करो**

**कपड़ा    जूते    लकड़ी    लोहे    रंग**

(1) लुहार ............ का काम करता है।

(2) चर्मकार ............ बनाता है।

(3) पेंटर खिड़की और दरवाज़ों पर ............ करता है।

(4) जुलाहा ............ बुनता है।

(5) बढ़ई ............ का काम करता है।

पाठ—14

# हंस किसका ?

एक राजकुमार था। उसका नाम सिद्धार्थ था। वह बहुत दयालु था। उसे पशु-पक्षियों से बहुत प्यार था।

एक दिन सुबह के समय सिद्धार्थ अपने बगीचे में घूम रहा था। ठंडी-ठंडी हवा चल रही थी। बगीचे में रंग-बिरंगे फूल खिले हुए थे। पक्षी चहचहा रहे थे।

अचानक पक्षियों का चहचहाना बंद हो गया। उसने ऊपर देखा। तभी एक हंस उसके पैरों के पास आकर गिरा। हंस के शरीर में तीर लगा हुआ था। वह छटपटा रहा था।

सिद्धार्थ ने हंस को उठाया। प्यार से उसके पंखों पर हाथ फेरा। धीरे से तीर निकाला। फिर घाव धोकर उस पर पट्टी बाँधी। इससे हंस का छटपटाना कुछ कम हुआ।

तभी वहाँ सिद्धार्थ का चचेरा भाई देवदत्त दौड़ा आया। उसके हाथ में धनुष-बाण था। हंस को सिद्धार्थ के हाथों में देखकर वह बोला, ''यह हंस मेरा है। इसे मुझे दे दो।''

सिद्धार्थ ने उत्तर दिया, ''नहीं, यह हंस मेरा है। मैंने इसे बचाया है।''

सिद्धार्थ हंस को लेकर राजमहल की ओर चल दिया देवदत्त भी उसके पीछे-पीछे चलने लगा।

सामने ही राजा शुद्धोदन खड़े थे। देवदत्त ने उनसे शिकायत की, कि ''सिद्धार्थ मेरा हंस नहीं दे रहा।''

सिद्धार्थ बोला, ''पिता जी, देवदत्त ने हंस को तीर मारा था। वह घायल हो गया। मैंने इसे पट्टी बाँधी। अब यह हंस मेरा है।'' देवदत्त बोला, ''नहीं, नहीं। यह मेरा है। मैंने इसे तीर से गिराया है।''

सिद्धार्थ बोला, ''लेकिन मैंने इसे बचाया है।'' राजा ने दोनों की बात सुनी। थोड़ी देर सोचा। फिर बोले, ''देवदत्त, तुमने इसी अपने तीर से गिराया है, परन्तु सिद्धार्थ ने इसे बचाया है। मारने वाले से बचाने वाले का हक ज़्यादा होता है। इसलिए हंस सिद्धार्थ का है।''

बच्चो ! यही राजकुमार सिद्धार्थ बड़ा होकर गौतम बुद्ध बना जिसने संसार को अहिंसा, प्रेम, दयालुता, करुणा, सहानुभूति, दया, परोपकार और भाईचारे का पाठ पढ़ाया।

## अभ्यास

**पढ़ो, समझो और लिखो**

(क) द् + ध = द्ध, = सिद्धार्थ, बुद्ध

क् + ष = क्ष = पक्षी

प् + य = प्य = प्यार

ट् + ट = ट्ट = पट्टी

त् + त = त्त = उत्तर, देवत्त

## शब्दार्थ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| राजकुमार | = | राजा का बेटा | दयालु | = | कृपायुक्त |
| प्यार | = | प्रेम | छटपटाना | = | तड़पना |
| चचेरा भाई | = | चाचा का बेटा | राजमहल | = | राजा का महल |
| हक | = | अधिकार | घाव | = | ज़ख्म |
| घायल | = | ज़ख्मी | अहिंसा | = | किसी को हानि न पहुँचाना |
| परोपकार | = | दूसरे का भला करना | भाईचारा | = | भाई का नाता या भाव |
| सहानुभूति | = | हमदर्दी | | | |

## बताओ

(1) राजकुमार का क्या नाम था ?

(2) सिद्धार्थ कहाँ घूम रहा था ?

(3) हंस क्यों छटपटा रहा था ?

(4) सिद्धार्थ ने हंस की क्या सहायता की ?

(5) सिद्धार्थ के चचेरे भाई का क्या नाम था ?

(6) सिद्धार्थ के पिता ने हंस किसे और क्यों दिया ?

(7) सिद्धार्थ को अन्य किस नाम से जाना जाता है ?

(8) गौतम बुद्ध ने संसार को कौन-सा पाठ पढ़ाया ?

## वाक्य पूरे करो

(1) बगीचे में ... फूल खिले हुए थे।

(2) हंस के शरीर में ... लगा हुआ था।

(3) मारने वाले से ... का हक ज़्यादा होता है।

(4) सिद्धार्थ बड़ा होकर ... बना।

(5) ... सिद्धार्थ का चचेरा भाई था।

| |
|---|
| तीर |
| बचाने वाले |
| रंग-बिरंगे |
| गौतम बुद्ध |
| देवदत्त |

## पढ़ो और समझो

(क) पक्षी = पंछी — शरीर = तन

बगीचा = उपवन — पंख = पर

तीर = बाण — राजा = नृप

(ख) राजकुमार = राजा का कुमार — पशु-पक्षी = पशु और पक्षी

राजमहल = राजा का महल — धनुष-बाण = धनुष और बाण

## अन्तर समझो

(क) **हंस** के शरीर में तीर लगा हुआ था।

जोकर को देखकर मैं **हँस** पड़ा।

(ख) सिद्धार्थ हंस को लेकर राजमहल **की** ओर चल दिया।

देवदत्त ने शिकायत की **कि** सिद्धार्थ मेरा हंस नहीं दे रहा।

**अध्यापन निर्देश :** इस पाठ का उद्देश्य बच्चों के मन में समस्त प्राणी-जगत के प्रति अहिंसा, प्रेम, दया सहानुभूति, करुणा का भाव जागृत करना है। अध्यापक बच्चों में ये जीवन मूल्य विकसित करने का प्रयास करें।

## रचनात्मक अभिव्यक्ति

### चित्र देखकर वाक्य पूरे करो

(1) बालक ... को ... खिला रहा है।

(2) बालिका ... को ... पिला रही है।

(3) पिताजी ... को सहला रहे हैं।

पाठ—15

# लोहड़ी

सुन्दर मुन्दरीये, हो;
तेरा कौन विचारा, हो;
दुल्ला भट्टी वाला, हो;
दुल्ले धी ब्याही, हो;
सेर शक्कर पाई, हो;
कुड़ी दा सालू पाटा, हो;
कुड़ी दा जीवे चाचा, हो;
चाचा चूरी कुट्टी, हो;
नम्बरदाराँ लुट्टी, हो;
गिन-गिन पोले लाए, हो;
इक पोला रह गया, हो;
सिपाही फड़ के ले गया, हो।

इस लोकगीत का संबंध पंजाब के प्रसिद्ध त्योहार लोहड़ी से है। यह त्योहार जनवरी महीने के मध्य में आमतौर पर 13 जनवरी को मनाया जाता है।

गाँवों में इसे मनाने की तैयारियाँ कई दिन पहले से शुरू हो जाती हैं। लड़के-लड़कियाँ टोलियाँ बनाकर लोकगीत गाते हुए घर-घर में जाते हैं। लकड़ियाँ और गोबर के उपले माँगकर लाते हैं तथा उन्हें एक स्थान पर इकट्ठा करते जाते हैं।

लोहड़ी वाले दिन सायंकाल होने पर घर के बाहर या आँगन में लकड़ियाँ और गोबर के उपले गोल आकार में चिन दिये जाते हैं। मुहल्ले के सभी लोग इकट्ठे होकर लकड़ियों के ढेर को आग लगाते हैं। उस आग में तिल, रेवड़ियाँ आदि डाली जाती हैं। फिर वे जलती हुई आग के चारों ओर गीत गाते हुए चक्कर लगाते हैं तथा उसके निकट बैठकर मूँगफली, रेवड़ियाँ, गज़क, भुग्गा और मकई के दाने खाते हैं तथा एक दूसरे को खिलाते हैं।

आजकल जलती हुई आग के निकट लोग गिद्दा, भँगड़ा आदि डालते हैं जिससे इस त्योहार का आनन्द और बढ़ जाता है।

## अभ्यास

**पढ़ो, समझो और लिखो**

(क) न् + द= न्द = सुंदर, आनंद

त् + य= त्य = त्योहार

ध् + य= ध्य = मध्य

(ख) ल् + ल = ल्ल = दुल्ला, मोहल्ला

क् + क = क्क = शक्कर, चक्कर

ट् + ट = ट्ट = भट्टी, लुट्टी

ग् + ग = ग्ग = भुग्गा

## शब्दार्थ

लोकगीत = साधारण जनता में प्रचलित गीत

उपले = गोबर में तूड़ी आदि मिलाकर हाथों से थोप पीटकर बनाई गई टिकिया

गिद्दा = स्त्रियों द्वारा किया जाने वाला पंजाबी लोकनृत्य

पोले = जूते

भँगड़ा = बड़े ढोल के ताल पर होने वाला पंजाबी लोकनृत्य

## बताओ

(1) लोहड़ी का त्योहार किस महीने में मनाया जाता है ?

(2) इस त्योहार को मनाने के लिए बच्चे क्या-क्या तैयारियाँ करते हैं ?

(3) लकड़ियाँ किस आकार में चिनी जाती हैं ?

(4) जलती हुई आग में क्या-क्या डाला जाता है ?

(5) लोहड़ी वाले दिन लोग क्या-क्या खाते हैं ?

## पढ़ो, समझो और लिखो

(क) लड़की = लड़कियाँ    लड़का = लड़के

टोली = ...    उपला = ...

लकड़ी = ...    मुहल्ला = ...

रेवड़ी = ...    दाना = ...

### नये शब्द बनाओ

न्द त्य ध्य ट्ट ग्ग

### रचनात्मक अभिव्यक्ति

1. लोहड़ी के समय गाये जाने वाले अन्य गीत याद करें और स्कूल में या घर में लोहड़ी के त्योहार पर उन्हें सुनायें।
2. अध्यापक से पता करें कि साल में कितने महीने होते हैं ? सभी महीनों के नाम लिखें।
3. आपके परिवेश में मनाये जाने वाले सभी त्योहारों की सूची बनायें और पता करें कि कौन सा त्योहार किस महीने में मनाया जाता है ?

**अध्यापन निर्देश :** अध्यापक बच्चों को 'दुल्ला भट्टी' की कहानी सुनाये जिससे बच्चे एक दूसरे की मदद करना सीखें तथा उन्हें सभी त्योहार मिल जुल कर मनाने की प्रेरणा दे।

पाठ—16

## श्रवण कुमार

बच्चो, आपने श्रवण कुमार का नाम अवश्य सुना होगा। वह बहुत आज्ञाकारी बालक था। उसके माता-पिता अंधे थे। वही उनका एकमात्र सहारा था। वह अपने माता-पिता की हर इच्छा पूरी करता था।

एक बार श्रवण के माता-पिता ने तीर्थ यात्रा पर जाने की इच्छा प्रकट की। उन दिनों उसके पास उन्हें तीर्थ यात्रा पर ले जाने के लिए कोई साधन नहीं था। उसने सोच-विचार कर एक तरकीब निकाली। उसने लकड़ी की एक बहँगी बनाई। उसमें अपने माता-पिता को बिठाया और उन्हें तीर्थ यात्रा पर लेकर निकल पड़ा।

भिन्न-भिन्न तीर्थों की यात्रा करते हुए वे एक दिन सरयू नदी के तट पर पहुँचे। एक रात वह अपने माता-पिता की सेवा में लीन था तो उन्होंने पानी पीने की इच्छा प्रकट की। वह बोला, ''पास ही नदी बह रही है। मैं अभी आपके लिए जल लेकर आता हूँ।''

जल का पात्र उठाकर वह जल लेने चला गया। उस समय अयोध्या का राजा दशरथ जंगली जानवरों के शिकार के लिए निकला हुआ था। जब श्रवण कुमार ने अपना बर्तन

नदी में जल भरने के लिए डुबोया तब पानी भरने की आवाज़ हुई जिसे सुनकर राजा दशरथ ने सोचा  कि कोई जंगली जानवर नदी पर पानी पीने के लिए आया है। उसने आवाज़ की दिशा में अपने धनुष से एक बाण छोड़ा जो श्रवण के सीने में जा लगा। उसने ज़ोर से चीख मारी। राजा दशरथ को जब मनुष्य की चीख सुनाई दी तो वह तुरन्त वहाँ पहुँच गया। श्रवण कुमार को अपने बाण से घायल हुआ देख वह बहुत दुःखी हुआ।

श्रवण कुमार के प्राण निकलते जा रहे थे। उसे मरते वक्त भी केवल अपने माता-पिता की ही चिंता थी। उसने दशरथ से कहा, ''राजन, आपने मुझे अनजाने में घायल कर दिया है। मैं तो यहाँ अपने माता-पिता के लिए जल लेने आया था। यहाँ से कुछ ही दूरी पर वे एक पेड़ के नीचे बैठे मेरी प्रतीक्षा कर रहे होंगे। क्योंकि वे बहुत प्यासे हैं। आप उन्हें जल ले जाकर पिला दीजिए।'' यह कहकर उसने प्राण त्याग दिए।

धन्य है श्रवण कुमार ! जिसे मरते वक्त भी अपने माता-पिता का ध्यान था। वह जिया तो अपने माता-पिता के लिए और मरा तो भी अपने माता-पिता के लिए।

## अभ्यास

### पढ़ो, समझो और लिखो

(क) ज् + ञ = ज्ञ = आज्ञा | ष् + य= ष्य = मनुष्य

श् + र= श्र = श्रवण | क् + त = क्त= वक्त

श् + य= श्य = अवश्य | प् + य= प्य = प्यास

त् + र = त्र = पात्र, एकमात्र | त् + य= त्य = त्याग

न् + ध= न्ध = अन्धा | न् + य= न्य = धन्य

च् + छ = च्छ = इच्छा

ध् + य= ध्य = अयोध्या

(ख) न् + न= न्न = भिन्न

### शब्दार्थ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| आज्ञाकारी | = | आदेश का पालन करने वाला | एकमात्र | = | अकेला |
| बहँगी | = | बाँस के फट्टे के दोनों छोरों पर छीका लटकाकर बनाया हुआ बोझ ढोने का साधन, काँवर। | | | |
| तरकीब | = | उपाय, ढंग | पात्र | = | बर्तन |
| बाण | = | तीर | प्रतीक्षा | = | इंतज़ार |
| प्राण त्यागना | = | मर जाना | | | |

### बताओ

(1) श्रवण कुमार कैसा बालक था ?

(2) श्रवण कुमार अपने माता-पिता को तीर्थ यात्रा पर कैसे लेकर गया ?

(3) सरयू नदी के निकट श्रवण क्या करने गया था ?

(4) श्रवण कुमार को बाण किसने मारा ?

(5) श्रवण ने राजा दशरथ से क्या कहा ?

### वाक्य पूरे करो

(1) श्रवण एक ... बालक था।

(2) उसके माता-पिता ... थे।

(3) तीर्थ यात्रा पर जाने के लिए उसने एक ... बनाई।

(4) श्रवण राजा ... के बाण से घायल हुआ।

(5) उसे मरते वक्त भी अपने ... की चिन्ता थी।

### जानो

| | | |
|---|---|---|
| भूख - प्यास | धनुष - बाण | सोच - विचार |
| माता - पिता | जिया - मरा | तीर्थ - यात्रा |

## नये शब्द बनाओ

| | | | |
|---|---|---|---|
| क्ष | ज्ञ | श्र | त्र |

## रचनात्मक कौशल

बच्चो ! आपने सावन के महीने में काँवरियों को देखा होगा जो गंगा नदी से जल लाकर शिवलिंग पर चढ़ाते हैं। अपने अध्यापक की सहायता से काँवर के चित्र में रंग भरें।

**अध्यापन निर्देश :** अध्यापक बच्चों को श्रवण कुमार की कहानी सुनाये और बच्चों को श्रवण कुमार जैसे गुण अपने में विकसित करने के लिए कहे। माता-पिता के अतिरिक्त बच्चे सभी बड़ों की आज्ञा का पालन करें।

पाठ—17

## प्यारा पंजाब

यह प्यारा पंजाब हमारा।
हम सबकी आँखों का तारा।।
इसके खेतों की हरियाली, दुःख और भूख मिटाने वाली,
इसके हल, इसकी पंजाली, देश की दूर करें कंगाली।
भारत माँ का राजदुलारा।
यह प्यारा पंजाब हमारा।।
इसके गुरुद्वारे, मंदिर, मस्जिद, गिरजे हैं सभी बराबर।
ये सब ही हैं ईश्वर के घर, सब ही पावन, सब ही सुंदर।

इसका है आदर्श न्यारा।

यह प्यारा पंजाब हमारा।।

इसके भँगड़े, गिद्दे, गीत, इसके साज़ और संगीत।

इसके युवक सभी के मीत, सबके मन को लेते जीत।

सब जग इनका भाईचारा।

यह प्यारा पंजाब हमारा।।

इसके बेटे वीर सिपाही, धर्म के रक्षक अमन के राही।

शत्रु दल की करें तबाही, देते सारे देश गवाही।

इनसे परिचित है जग सारा।

यह प्यारा पंजाब हमारा।।

## अभ्यास

### पढ़ो, समझो और लिखो

(क) प् + य = प्य = प्यारा त् + र = त्र = शत्रु

द् + व = द्व = गुरुद्वारा क् + ष = क्ष = रक्षक

न् + य = न्य = न्यारा स् + ज = स्ज = मस्जिद

(ख) द् + द = द्द = गिद्दा

### शब्दार्थ

पंजाब = पाँच नदियों का प्रदेश जो अब भारत और पाकिस्तान में बँट गया है

पंजाली = खेती में प्रयोग होने वाला औज़ार, जिससे भूसा इकट्ठा किया जाता है

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कंगाली | = | गरीबी | पावन | = | पवित्र |
| मीत | = | मित्र | रक्षक | = | रक्षा करने वाला |
| अमन | = | सुख-शांति | तबाही | = | नष्ट होना |
| गवाही | = | सत्य का बयान करना | राही | = | यात्री, मुसाफिर |

## बताओ

(1) पंजाबियों ने अपने देश की गरीबी को कैसे मिटाया है ?

(2) पंजाब के सभी धार्मिक स्थानों का क्या महत्व है ?

(3) पंजाबी युवक अपना मनोरंजन कैसे करते हैं ?

(4) पंजाबी शत्रु का सामना किस प्रकार करते हैं ?

## तुक मिलाओ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| पंजाली | = | कंगालो | राही | = | ... |
| मीत | = | ...... | तबाही | = | ... |

## वाक्य बनाओ

आँखों का तारा, भाईचारा, गवाही

## पढ़ो और समझो

| | | | |
|---|---|---|---|
| दुःख | = सुख | धर्म | = अधर्म |
| भूख | = प्यास | शत्रु | = मित्र |
| जीत | = हार | रक्षक | = भक्षक |

**अध्यापन निर्देश :** अध्यापक बच्चों के मन में अपने प्रदेश, राष्ट्र के प्रति प्रेम विकसित करे।

रचनात्मक ज्ञान

मिलान करें

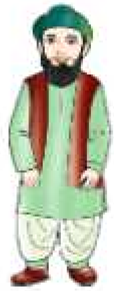

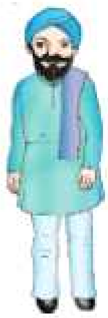

## पाठ—18

# साथी हाथ बढ़ाना

आज बच्चे बहुत खुश नज़र आ रहे थे। वे अपने अध्यापकों के साथ पिकनिक मनाने जा रहे थे। सभी स्कूल के बाहर खड़े थे और बस के आने की प्रतीक्षा कर ही रहे थे कि इतने में बस आ गयी। सभी बच्चे एक-एक करके बस में चढ़ गये लेकिन सभी पीछे मुड़-मुड़कर रवि को देख रहे थे। वह धीरे-धीरे आ रहा था क्योंकि उसके पैर में चोट लगी हुई थी। तभी अमित आगे बढ़ा। इसने रवि को सहारा देकर बस में चढ़ा दिया।

कंडक्टर ने सीटी बजायी और बस चल पड़ी। बच्चे अपना-अपना टिफिन लेकर आये हुए थे। कोई पूरियाँ लेकर आया था तो कोई कचौरियाँ। किसी के पास लड्डू, बिस्कुट और नमकीन थी तो किसी के पास हलवा और पकौड़े थे। सभी बच्चों ने मिल-बाँट कर नाश्ता किया। तभी बच्चों ने अध्यापिका से कहा, ''मैडम, हमें कहानी सुनाओ।''

मैडम ने कहानी सुनानी शुरू की। एक बार कुछ कबूतर आकाश में उड़ रहे ते। एक शिकारी आया। उसने कबूतरों को पकड़ने के लिए अनाज के दाने बिखराकर जाल बिछा दिया। भोले-भाले कबूतर दाने के लालच में आ गये। ज्यों ही वे दाना खाने के लिए नीचे

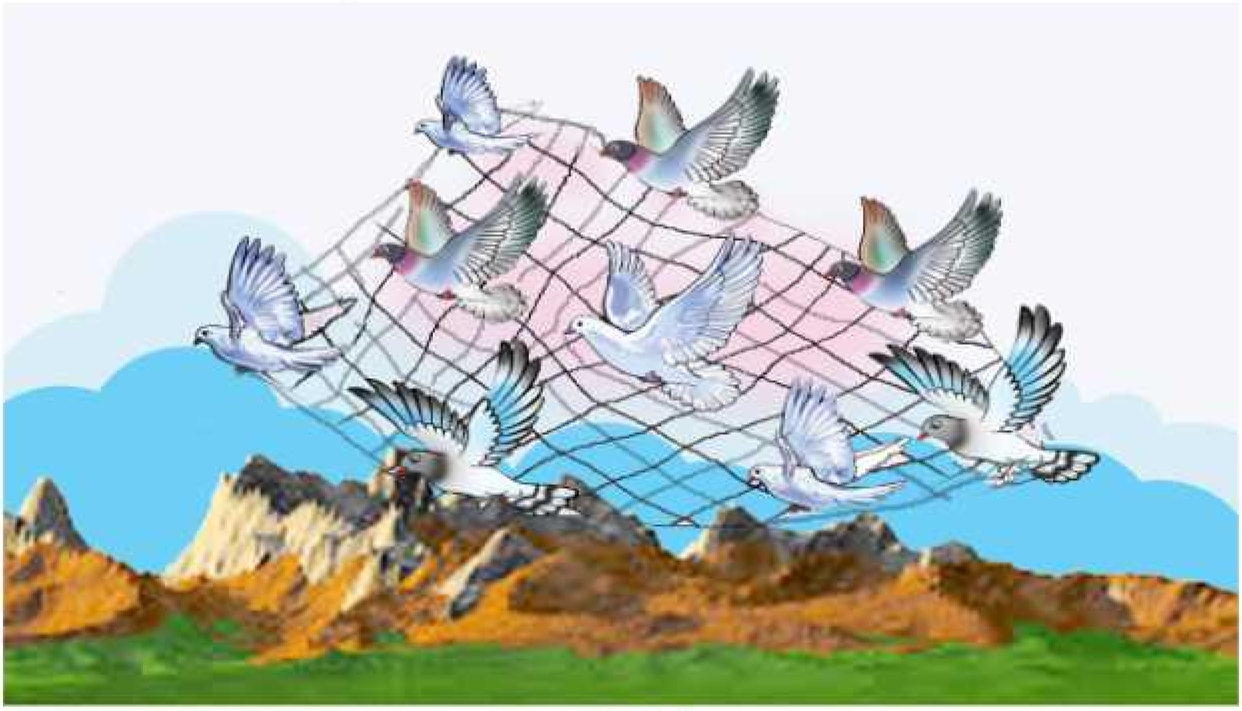

उतरे त्यों ही जाल में फँस गये। किन्तु बच्चो, उन्होंने हिम्मत नहीं हारी। सभी ने मिलकर ज़ोर लगाया। वे जाल को लेकर उड़ गये। बच्चे कहानी का आनन्द ले रहे थे तभी एक ज़ोर का झटका लगा और बस रुक गयी। बस का पहिया गड्ढे में धँस गया था। ड्राइवर ने बहुत प्रयत्न किया परंतु पहिया टस से मस नहीं हुआ। सभी बच्चे और अध्यापक नीचे उतर आये। सारा मज़ा किरकिरा हो गया।

अध्यापक ने कहा, ''बच्चो ! यदि पहिये के नीचे कुछ ईंट, पत्थर आदि डालकर बस को सरकाया जाये तो पहिया गड्ढे से अवश्य बाहर निकल आयेगा।''

फिर क्या था। बच्चों की आँखों में चमक आ गयी। उन्होंने आस-पास से ईंट-पत्थरों को इकट्ठा किया और उन्हें पहिए के नीचे डाल दिया। फिर सभी ने एकजुट होकर बस को धकेला। सचमुच, पहिया गड्ढे से बाहर निकल आया। वे फिर से बस में सवार हो गये। सरपट दौड़ती हुई बस पिकनिक स्थल पर पहुँच गई।

## अभ्यास

**पढ़ो, समझो और लिखो**

(क) ध् + य = ध्य = अध्यापक

स् + क = स्क = बिस्कुट

स् + थ = स्थ = स्थल

त् + थ = त्थ = पत्थर

क् + ट = क्ट = कंडक्टर

त् + न = त्न = प्रयत्न

ड् + र = ड्र = ड्राइवर

ज् + य = ज्य = ज्यों

त् + य = त्य = त्यों

(ख) ड् + ड = ड्ड = लड्डू

**शब्दार्थ**

प्रतीक्षा = इन्तज़ार

कंडक्टर = बस में टिकट देने वाला, परिचालक

पिकनिक = किसी खूबसूरत स्थान पर जाकर खाने-पीने और खेलने का आनन्द लेना

एकजुट = मिलकर, इकट्ठे होकर

स्थल = स्थान, जगह

### बताओ

(1) रवि धीरे-धीरे क्यों चल रहा था ?

(2) बच्चों ने नाश्ता कैसे किया ?

(3) शिकारी ने कबूतरों को जाल में फँसाने के लिए क्या किया ?

(4) कबूतरों वाली कहानी से आपको क्या शिक्षा मिलती है ?

(5) बच्चों ने बस के पहिये को गड्ढे से बाहर कैसे निकाला ?

### वाक्य बनाओ

अध्यापक    पिकनिक    प्रतीक्षा    कंडक्टर    गड्ढा

### पढ़ो, समझो और लिखो

| (क) | | (ख) |
|---|---|---|
| पूरी = पूरियाँ | | बच्चा - बच्चे |
| कचौरी = कचौरियाँ | | पकौड़ा - पकौड़े |
| सीटी = सीटियाँ | | दाना - दाने |
| कहानी = कहानियाँ | | पहिया - पहिये |

### मुहावरों के अर्थ समझते हुए वाक्य बनाओ

सहारा देना = सहायता करना

टस से मस न होना = एक स्थान पर बने रहना

हिम्मत न हारना = हौसला बनाये रखना

मज़ा किरकिरा होना = खुशी में रुकावट होना

आँखों में चमक आना = आशा दिखना

### समझो

| | | | |
|---|---|---|---|
| अध्यापक | = शिक्षक | कहानी | = कथा |
| प्रतीक्षा | = इंतज़ार | आकाश | = नभ, आसमान |
| सहारा | = सहायता | ड्राइवर | = बस चालक |

### नये शब्द बनाओ

ध्य स्क त्थ त्न

### रचनात्मक अभिव्यक्ति

बच्चे चित्र देखकर बतायें कि दोनों व्यक्ति एक दूसरे को किस प्रकार सहयोग कर रहे हैं।

**अध्यापन निर्देश :**

1. अध्यापक इस कहानी के आधार पर बच्चों में 'सहयोग' का मूल्य विकसित करने का प्रयास करे। वार्तालाप द्वारा बच्चों से पूछे कि वे घर में तथा स्कूल में अपना सहयोग कहाँ-कहाँ दे सकते हैं ?
2. अध्यापक पाठ संख्या 3 और 4 में दिये गये निर्देशों को दोहराये।

पाठ—19

# अनमोल सीख

गुरु नानक देव जी सिक्ख धर्म के प्रथम गुरु थे। उन्होंने छोटी-छोटी घटनाओं या बातचीत के द्वारा जीवन की गूढ़ बातों को समझाया है।

गुरु जी ने मानवता के कल्याण के लिए देश-विदेश में अनेक यात्राएँ कीं। इन यात्राओं के दौरान उनका साथी भाई मरदाना हमेशा उनके साथ रहता था।

एक बार यात्रा करते-करते गुरु जी एक गाँव में पहुँचे। वहाँ के लोग बड़े रूखे स्वभाव के थे। उन्होंने गुरु जी को ठहरने के लिए नहीं कहा। वहाँ से जाते समय गुरु जी ने कहा— यह गाँव बसा रहे।

चलते-चलते गुरु जी दूसरे गाँव में पहुँचे। उस गाँव के लोगों ने गुरु जी को और भाई मरदाना को भाँति-भाँति के भोजन प्रेम पूर्वक परोसे। गाँव के लोगों ने गुरु जी के विचार

बड़े ध्यान से सुने। जब गुरु जी वहाँ से जाने लगे तो उन्होंने कहा—यह गाँव उजड़ जाये।

भाई मरदाना बहुत हैरान हुआ और कहने लगा गुरु जी ! यह क्या ? जिस गाँव के लोगों ने आपको पानी तक नहीं पूछा, उनके बारे में आपने कहा कि यह गाँव बसा रहे और जिस गाँव के लोगों ने आपकी इतनी सेवा की, उन्हें आप उजड़ जाने का शाप दे रहे हो। यह बात क्या है ?

गुरु जी कहने लगे—भाई मरदाना ! पहले गाँव के लोगों का व्यवहार अच्छा नहीं था इसलिये वे लोग जहाँ भी जायेंगे अपनी बुराई फैलायेंगे। उन लोगों का अपने गाँव में रहना ही ठीक है।

दूसरे गाँव के लोगों का व्यवहार बहुत अच्छा था। वे जहाँ भी जायेंगे अच्छाई फैलायेंगे। हम चाहते हैं कि अच्छाई अधिक से अधिक फैले इसलिए मैंने इन्हें उजड़ जाने को कहा।

यह सुनकर भाई मरदाना कह उठा, ''वाह गुरु जी !''

## अभ्यास

**पढ़ो, समझो और लिखो**

(क) क् + ख = क्ख = सिक्ख व् + य = व्य = व्यवहार

द् + व = द्व = द्वारा च् + छ = च्छ = अच्छा, अच्छाई

ल् + य = ल्य = कल्याण स् + व = स्व = स्वभाव

(ख) ध + र् + म = धर्म

प् + र + थ + म = प्रथम

य् + आ + त् + र + आ = यात्रा

### शब्दार्थ

भाँति-भाँति = तरह-तरह

गूढ़ = गहरी

बसना = एक स्थान पर टिके रहना

उजड़ना = चारों ओर फैल जाना

### बताओ

(1) सिक्ख धर्म के पहले गुरु का नाम लिखो।

(2) गुरु जी के साथी का क्या नाम था ?

(3) जिस गाँव के लोगों का स्वभाव रूखा था, गुरु जी ने उनके लिए क्या कहा ?

(4) जिस गाँव के लोगों का स्वभाव अच्छा था, गुरु जी ने उनके लिए क्या कहा ?

(5) गुरु जी ने उजड़ने का शाप क्यों दिया ?

### वाक्य पूरे करो

(1) ................. सिक्ख धर्म के प्रथम गुरु थे।

(2) उनका साथी ................. हमेशा उनके साथ रहता था।

(3) उजड़ जाओ और .................।

(4) गुरु जी ने मानवता के ................. के लिए अनेक यात्राएँ कीं।

### जानो और लिखो

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| पहला | = | अन्तिम | गुरु | = | शिष्य |
| उजड़ना | = | बसना | शाप | = | वरदान |

### लिखो

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| घटना | = | घटनाएँ | बुराई | = | बुराइयाँ |
| यात्रा | = | ............ | अच्छाई | = | ............ |

## रचनात्मक ज्ञान

सिक्ख धर्म के दस गुरुओं के नाम पता करके लिखो।

1. ........................................................
2. ........................................................
3. ........................................................
4. ........................................................
5. ........................................................
6. ........................................................
7. ........................................................
8. ........................................................
9. ........................................................
10. ........................................................

**अध्यापन निर्देश :** अध्यापक बच्चों को गुरु नानक देव जी के बारे में प्रचलित अन्य शिक्षाप्रद कहानियाँ सुनाये।

## पाठ—20

# बापू गाँधी के तीन बंदर

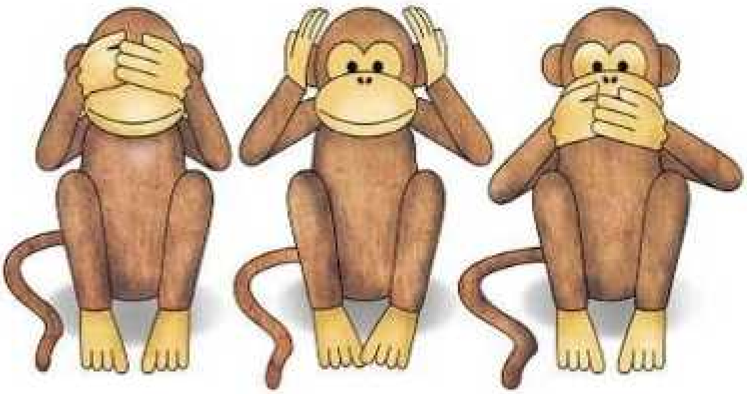

बच्चो, चित्र देखो। चित्र में आपको तीन बंदर दिखाई दे रहे हैं। पहले बंदर के चित्र को ध्यान से देखो। इसने अपने दोनों हाथों से अपनी आँखों को ढका हुआ है। क्या आप बता सकते हो कि यह क्या कह रहा है ? यह बंदर कह रहा है—बुरा मत देखो।

अब दूसरे बंदर के चित्र को ध्यान से देखो। इसने अपने दोनों हाथों से अपने मुँह को ढका हुआ है। यह क्या कह रहा है ? यह कह रहा है—बुरा मत बोलो।

अब तीसरे बंदर के चित्र को ध्यान से देखो। इसने अपने दोनों हाथों से अपने कानों को ढका हुआ है। यह क्या कह रहा है ? यह कह रहा है—बुरा मत सुनो।

बच्चो, ये तीनों बंदर हमें तीन अच्छी बातें सिखा रहे हैं। हमें इनकी शिक्षा को अपने जीवन में अपनाना चाहिए।

आपने गाँधी जी का नाम सुना होगा। बंदरों की ये तीन मूर्तियाँ गाँधी जी के कमरे में रखी हुई थीं। गाँधी जी का पूरा नाम मोहनदास कर्मचंद गाँधी था। प्यार से उन्हें, 'बापू' कहा जाता है।

गाँधी जी का जन्म 2 अक्टूबर, 1869 को गुजरात प्रदेश के पोरबंदर नामक स्थान पर हुआ था। इनके पिताजी का नाम कर्मचंद गाँधी और माता जी का नाम पुतली बाई था।

ये अपनी माता जी की कही हर बात का सम्मान करते थे। इनकी पत्नी का नाम था—कस्तूरबा गाँधी।

उन दिनों हमारे देश पर अंग्रेज़ राज्य करते थे। गाँधी जी ने सत्य और अहिंसा का मार्ग अपनाया और हमारे देश को अंग्रेज़ों से आज़ाद करवाया। इनकी मृत्यु 30 जनवरी 1948 को हुई। इनकी समाधि दिल्ली में राजघाट पर है। इन्हें राष्ट्रपिता के नाम से जाना जाता है।

## अभ्यास

### पढ़ो, समझो और लिखो

(क)

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| त् + य | = त्य | = सत्य, मृत्यु | प् + य | = प्य | = प्यार |
| त् + र | = त्र | = चित्र | न् + म | = न्म | = जन्म |
| ज् + य | = ज्य | = राज्य | स् + त | = स्त | = कस्तूरबा |
| च् + छ | = च्छ | = अच्छी | ल् + ल | = ल्ल | = दिल्ली |

(ख)

म् + ऊ + र् + त् + इ = मूर्ति

अं + ग् + र् + ए + ज़् + अ = अंग्रेज़

म् + आ + र् + ग् + अ = मार्ग

र् + आ + ष् + ट् + र् + अ = राष्ट्र

### शब्दार्थ

समाधि = किसी महान पुरुष की यादगार

सत्य = सच

हिंसा = बुरा करना, चोट या हानि पहुँचाना

## बताओ

(1) बंदरों की तीन मूर्तियाँ कहाँ पर रखी हुई थीं ?

(2) बंदरों के तीनों चित्र हमें क्या शिक्षा दे रहे हैं ?

(3) गाँधी जी का पूरा नाम क्या था ?

(4) गाँधी जी ने हमें अंग्रेज़ों से आज़ाद कैसे करवाया ?

(5) गाँधी जी की समाधि कहाँ पर है ?

(6) राष्ट्रपिता के नाम से किसे जाना जाता है ?

## समान अर्थ वाले शब्दों का मिलान करो

| | |
|---|---|
| बंदर | तसवीर |
| चित्र | रास्ता |
| शिक्षा | वानर |
| मार्ग | सीख |

## इन्हें समझो

मूर्ति = मूर्तियाँ    कान = कानों

समाधि = ...........    हाथ = ...........

आँख = ...........    बात = ...........

## 'अ' लगाकर विपरीत शब्द बनाओ

सत्य = असत्य    शिक्षा = ............

हिंसा = ............    समान = ............

## जानो

जन्म = मृत्यु    सुमार्ग = कुमार्ग

आज़ादी = गुलामी    अर्थ = अनर्थ

## सही मिलान करो

| | |
|---|---|
| कर्मचंद गाँधी | गाँधी जी का जन्म स्थान |
| पोरबंदर | गाँधी जी की माता का नाम |
| पुतलीबाई | गाँधी जी की पत्नी का नाम |
| कस्तूरबा गाँधी | गाँधी जी के पिता का नाम |

## रचनात्मक अभिव्यक्ति

बच्चे देश के वर्तमान प्रधानमंत्री का चित्र चिपकायें और उनके बारे में जानकारी एकत्र करें।

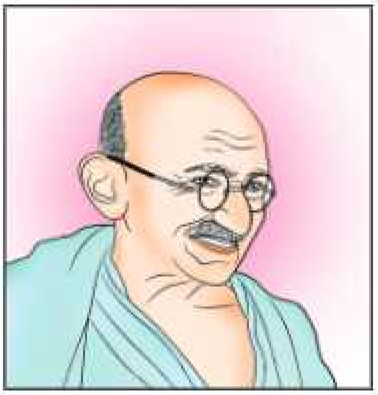

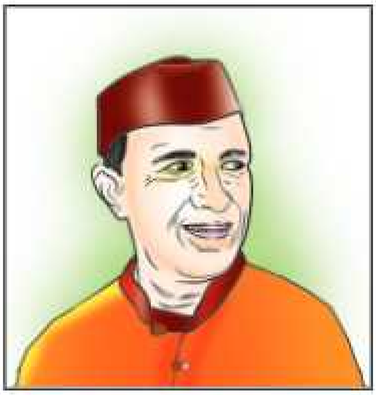

**अध्यापन निर्देश :** अध्यापक बच्चों को गाँधी जी के बचपन की कुछ घटनाएँ सुनाये।

# पाठ—21

## कौन ?

अगर न होता चाँद, रात में,

हमको दिशा दिखाता कौन ?

अगर न होता सूरज, दिन को

सोने-सा चमकाता कौन ?

अगर न होती निर्मल नदियाँ
जग की प्यास बुझाता कौन ?
अगर न होते पर्वत, मीठे
झरने भला बहाता कौन ?
अगर न होते पेड़, भला फिर
हरियाली फैलाता कौन ?
अगर न होते फूल, बताओ
खिल-खिलकर मुस्काता कौन ?
अगर न होते बादल, नभ में
इंद्रधनुष रच पाता कौन ?
अगर न होते हम तो बोलो,
ये सब प्रश्न उठाता कौन ?

## अभ्यास

**पढ़ो, समझो और लिखो**

(क) प् + य = प्य = प्यास

स् + क = स्क = मुस्काता

र् + व = र्व = पर्वत

श् + न = श्न = प्रश्न

## शब्दार्थ

दिशा = ओर, तरफ़, चार मुख्य दिशाएँ पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण

नभ = आकाश

निर्मल = मल रहित, साफ़

इन्द्रधनुष = बारिश के बाद आकाश में दिखाई देने वाला सात रंगों का आधा गोला

जग = संसार

## वाक्य पूरे करो

(1) चाँद और सूरज हमें ... देते हैं।

(2) नदियाँ हमें ... देती हैं।

(3) पेड़ हमें ... देते हैं।

(4) बादल हमें ... देते हैं।

(5) बारिश के बाद आकाश में ... दिखाई देता है।

| |
|---|
| इंद्रधनुष |
| बारिश |
| रोशनी |
| पानी |
| हरियाली |

## बताओ

(1) चाँद और सूरज से हमें क्या मिलता है ?

(2) नदियाँ हमारी किस ज़रूरत को पूरा करती हैं ?

(3) पेड़ों से हमें क्या-क्या प्राप्त होता है ?

(4) फूल हमें क्या सिखाते हैं ?

(5) इंद्रधनुष कब दिखाई देता है ?

## पढ़ो और समझो

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| (क) | पर्वत | = | पहाड़ | जग | = | संसार |
| | चाँद | = | चंद्रमा | सूरज | = | सूर्य |
| | पेड़ | = | वृक्ष | फूल | = | पुष्प |
| | नभ | = | आकाश | बादल | = | मेघ |
| | दिन | = | दिवस | रात | = | रात्रि |
| (ख) | झरना | = | झरने | मुस्काता | = | ... |
| | बहाता | = | ... | फैलाता | = | ... |

## रचनात्मक कौशल

बच्चे किसी चार्ट पर इंद्रधनुष बनायें और उसमें अपने अध्यापक से पूछ कर रंग भरें।

**अध्यापन निर्देश :**

अध्यापक बच्चों को वर्षा के बाद आकाश में इंद्रधनुष दिखाये और उन्हें बताये कि यह कैसे बनता है ? इसमें कौन-कौन से रंग होते हैं ? उनके नाम लिखवाये।

प्रकृति की सुंदरता की प्रशंसा करना सिखाये तथा बच्चों को इसी से मिलती-जुलती कोई अन्य कविता याद करवाये।